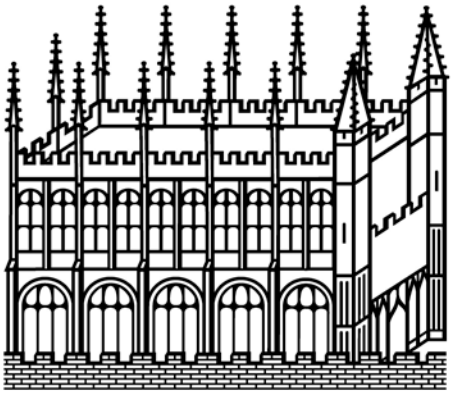

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi gen. 14

13.A.31.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.





Bālabhūshaṇa

Bala Bhoakhan

बालाभूषण

प्रथमभाग

जिसको

श्रीमन्महाराजाधिराज अवध देशीयशिक्षाप्रबन्धाधिकारी श्रीयुत कौलिन ब्रौनिङ्ग साहब एम० ए डेरेक्टर आफ़ पबलिक इन्स्ट्रक्शन बहादुर की

आज्ञानुसार

स्त्रीशिक्षाओं के उपकारार्थ

अवध अखबार के सम्पादक मुन्शी नवलकिशोर ने

अति विचित्रता और शुद्धता पूर्वक

सचित्र रचितकराय

लखनऊ

निज पाषाण यन्त्रालय में छापा

सन १८७२ ई०

बालाभूषण का सूचीपत्र ॥

	विषय	पृष्ठ
१	भूमिका	१
२	अक्षरसचित्र	१से ५२
३	स्वर	५३
४	ह्रस्वस्वर	५३
५	दीर्घस्वर	५४
६	प्लुत	५४
७	मात्रा	५५
८	व्यञ्जनोंकाभेद	५५
९	व्यञ्जनोंका मुख्यरूप	५७
१०	स्वरों का पूर्ण रूप	५७
११	स्वरों का दूसरा स्वरूप	५८
१२	व्यञ्जन और मात्रा का योग	५८
१३	प्लुत	६३
१४	लघुवाक्य	६५

	विषय	पृष्ठ
१५	हल का योग	६८
१६	संयोगी हल	६९
१७	हिल अक्षरों का स्वरूप	७०
१८	व्यञ्जनों के योग का प्रकार	७२
१९	जाली बनाने की रीति	९६
२०	सारठौर सोहर जो जन्म के समय स्त्रियां गाती हैं	११०
२१	पुत्र के जन्म के सोहर	११७
२२	छठी सोहर	११८
२३	असीस	११९
२४	लड़के की छठी	१२०
२५	छठी का सोहर	१२०
२६	लड़के की बरही	१२१
२७	बरही का सोहर	१२१

	विषय	पृष्ठ
२८	अन्नप्रासन	१२२
२९	मूंडन कन छेदन का गीत	१२३
३०	जनेऊ	१२४
३१	जनेऊ का गीत	१२४
३२	बरछा	१२५
३३	बरछा की गारी	१२५
३४	तिलक	१२६
३५	तिलक का गीत	१२७
३६	बिवाह का गीत	१२७

लि॰ कापीनवीस मुरलीधर

भूमिका

यह ईश्वर कृत भूमण्डल बड़े २ देशों और
समुद्रों से सुशोभित है और परमेश्वर ने अपनी
दयालुता और अनुग्रह से प्रत्येक स्थान में नाना
प्रकार की उपकारी वस्तु और द्रव्य उत्पन्न करी हैं
जिन से कि सब छोटे बड़े निवासियों को बड़े २ लाभ
प्राप्त हों और इस अवध देश को तो ईश्वर ने अपनी
इच्छा से किन्तु अपनी ही देह से ऐसी शोभा और
प्रवीणता से बनाया कि अति कृपालु दयालु सकल
गुण खान सज्जन राजा महाराजा आदि देशाधिपतियों से अलंकृत किया और बड़े २ पण्डित विद्वान और
गुणवान मनुष्यों से उच्चाभिलाषी किया कि पूर्वकाल
से यहाँ की उदारता प्रवीणता और गुणज्ञता अथवा

सुशीलता देश २ में विख्यात है मनुष्यों के विशेष यहाँ की स्त्रियांभी अन्य देश की स्त्रियोंसे विद्या गुणशील आदिमें उत्तम और पतिव्रत धर्ममें अतिप्रशंसनीय चली आई हैं उन का वर्णन पुराणों और अनेक पुस्तकों में बड़े २ महात्माओंने लिखा है और थोड़ाही समय हुआ कि राजा भोज के समय तक विद्या का ऐसाही अधिकार और वृद्धि चला आया उस समय की स्त्रियोंने ऐसी २ पुस्तकें और ग्रन्थ बनाये कि जिन से महा विद्वान प्रसिद्ध हो कर उत्तमता और प्रवीणता की पदवियां पाई और आज तक उन की उदारता संसार में ऐसी प्रसिद्ध है कि उन की समानता इस समय कोई नहीं कर सका देखो लीलावती जो राजा भोज की स्त्री थी कैसी विद्वान और गुणवती थी कि जिस के ग्रंथ सब संसारमें प्रचलित हैं और जिसने बड़े २ पण्डितों से शास्त्रार्थ

कर के प्रतिष्ठा पत्र पाया और श्रीकृष्ण महाराज के समय में श्रीरुक्मिणीजी जिन्होंने अपने हाथ से पत्री लिख कर द्वारिका में श्रीकृष्णजी को भेजी और राधिका आदि सब गोपियां संस्कृत और देशीय भाषा में अति निपुण थीं राजाओं के दरबार से स्त्रियों की शिक्षा के लिये पाठशाला नियत थी गुणी स्त्री पुरुषों का बड़ा सन्मान हो कर राजाओं के यहाँ से बड़ी प्रतिष्ठा पूर्वक उन का निर्वाह होता था इस गुण गाहकता के कारण उस समय विद्या रूपी सूर्य उदय था क्योंकि प्रसिद्ध है कि यथा राजा तथा प्रजा परन्तु इस मध्य काल में किसी देशाधिपति का ध्यान विद्या की ओर नरहने और कोई गुण गाहक न होने के कारण विद्या का दीपक मन्द होने लगा और स्त्रियों की शिक्षा का द्वार अन्य देशीय राजाओं के आने के कारण बन्द हो गया और गुण का सूर्य

मूर्खता रूपी अस्ताचल में अस्त होगया और थोड़ेही काल में विद्या के कम प्रचार के कारण और आज तक किसी ऐसे प्रकार के ग्रंथ वा पुस्तक के न होनें से (कि जिस में स्त्रियोंकी जानी हुई बातें और उन के मन लगने की कहानियाँ हों और वर्णमाला के अक्षर भी उस के द्वारा सुगमता से उन के ध्यान में आवें और विद्या पढ़ने में चित्त से अनुराग हो) इत्यादि उपयोगी बातों के न होनें से इस देश के नगर और गांव की रहने वाली कन्या मूर्ख रहने लगी यहाँ तक कि कुछ काल पीछे उन की प्रकृति में भी मूर्खता समा गई तो पुरुष स्त्रियों को विद्या से रहित रखना कुल की रीति समझने लगे और स्त्रियों की शिक्षा की ओर कभी किसी राजा वा प्रजा ने ध्यान न किया परन्तु जब से इस देश में श्रीयुत सर्कार अंगरेज़ी का प्रबंध हुआ

है तब से फिर नये सिरे से इस देश में विद्या का प्रति दिन अधिकार होकर विद्वान और गुण वानों की बड़ी प्रशंसा होनें लगी और मूर्खता का तिमिर बुद्धि और विद्या रूपी भानु से नाश होने लगा और पंकज रूपी सज्जन गुणी लोग प्रफुल्लित हुए और प्रत्येक गाँव और नगरों में बालक और बालकियों की शिक्षा के हेतु पाठ शालादि उपयोगी स्थान नियत हुए शिक्षक और अध्यापकादि पृथक् २ भाषा के जानने वाले नियत किये गये इस अवध देश में तो थोड़े ही काल में विद्या का ऐसा प्रचार हो गया कि कोटे २ बालक और लड़कियों आदि अनेक विद्याओं में निपुण हो कर परीक्षा देने के योग्य हो गये और ऐसा प्रचार विद्या का इस समय में हुआ है कि पूर्व्व काल में किसी राजा महाराजा के समय में न हुआ था इस निमित्त विद्या और संसारी

कार्य्यों में अति कुशल होने के निमित्त सर्व्व विद्या गुण सम्पन्न परम गुणज्ञ अति कृपालु प्रशंसनीय तेजस्वी अवध देश के श्रीयुत प्रतापी साहब डैरेक्टर आफ़यब्लिक इन्स्ट्रक्शन सी. ब्रौनिङ्ग साहब एसए बीएजो इस देश की भलाई में अहर्निश आरूढ रहते हैं उन की आज्ञानुसार अवध अख़बार के सम्पादक मुन्शीनवल किशोर ने सबस्त्रियों की जड़ता सुधार ने और विद्वान होकर सुमार्ग में प्रवृत्त होने के हेतु बालाभूषण नाम पुस्तक बड़े विचार और खोजना पूर्व्वक अपने प्रबन्धसे बनवाई इसमें स्वर व्यंजन सम्पूर्ण वर्णमाला के एक२ अक्षर का अवयव अलग२ लिखकर के धन के + चिह्न से अक्षर को पूर्ण किया है और प्रत्येक अक्षरपर एक२ शिक्षा संयुक्त दोहा और उसी वर्ण के नाम का सुन्दर चित्र तदनन्तर क्रमसे अनेक

लघुग्रन्थ और उन के वाक्य और शिक्षाप्रबन्ध के आशय और बुद्धि प्रकाश से जाली बनाना अथवा व्यंजन प्रकार से रसोई के पाक बनाना और स्त्रियों के व्यवहारिक संक्षेप से गीत भी लिखे हैं इसके पढ़ने से स्त्रियां अपने व्यवहारिक रसोई के अनेक व्यंजन बनानें वा बनवाने में निपुण और शिल्प विद्या में अतिकुशल हो जाली बूंटे बनाने में दक्ष हो कर किसी के आश्रित न रहैंगी और न किसी के कुलमें आवेंगी और जो कोई पुरुषभी इस पुस्तक के आशय को भली भांत से समझेगा वह अवश्य अपनी लड़कियों को रसोई शिल्प विद्या और व्यवहारिक गीतों में अति प्रवीण होने के लिये पढ़ावेगा क्योंकि लड़कियों को वा बड़ी स्त्रियों को पूर्व्वोक्त रसोई आदिका जितना अभ्यास अधिक होता है उतनी ही उन की

प्रशंसा होती है ये सब विद्या रसायन रूप है रसाय
न विद्या बिना सीखे पढ़े कभी नहीं आसकी आश
य यह है कि यह अपूर्व्व पुस्तक बनी है
निश्चय है कि पूर्व्वोक्त गुण सम्पन्न डैरेक्टर
साहब बहादुर भी इस को चित्तसे पसन्द करेंगे
इस हेतु यह उन को निवेदन कीजाती है
और जो कुछ उन की प्रसन्नता का फल पारितो
षिक के प्रकार से मिलेगा वह समाचार पत्र के
द्वारा सब छोटे बड़ों को प्रकट किया जायगा
जिससे कि उन की उदारता और गुणज्ञता प्रकट
हो इस में जहाँ कहीं भूल चूक हो उस को सुजन
लोग सुधार लें क्योंकि अच्छों की सदैव से यही
रीति चली आई है — इति —

> + ‸ + ५ + ‾ = अ

अ

अनार

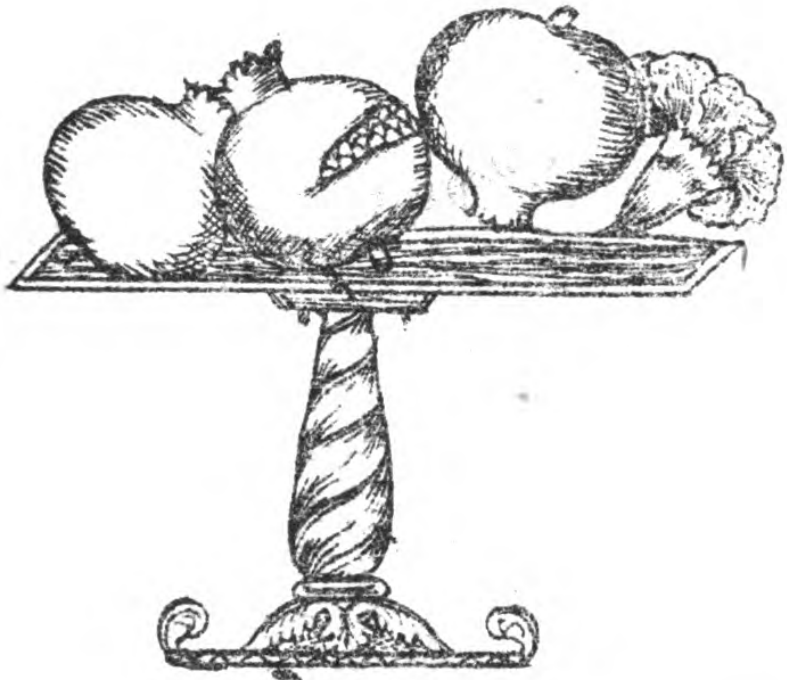

दोहा

अन पूछे नहिं भाषिये यही सीख जियराख
जो विन पूछे कहत हैं तिन की है नहि साख १

अ + ा = आ

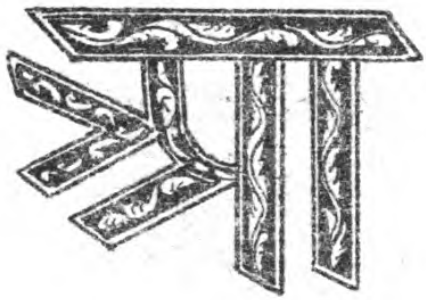

आंब



दोहा

आध सेर के पात्र में । कैसे सेर समाय ॥
पाव भेर की भूख में । कैसे सेर पचाय २

१ + २ + ३ = ६



दूका

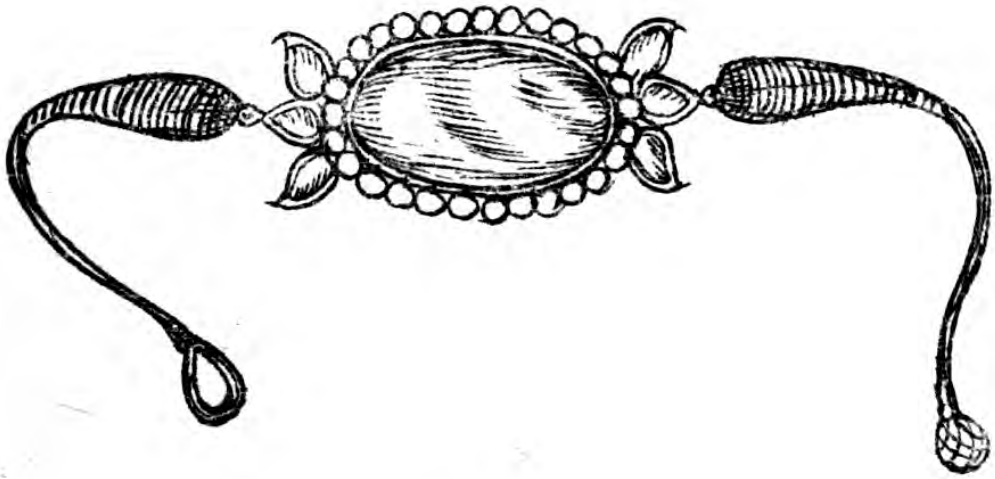

दोहा

इष्ट मित्र बंधू जिते। जान परें सब कोय॥
जब आपत में होतजन। कहत सयानेजोय३

इ + ॅ = ई

ई

ईख



दोहा

ईख सरस बहु होत है देखत मांहि कठोर ॥
पोर पोर क्रमतें अधिक रस में होत न थोर ४

ऌ + ऌ + ऌ + ॄ = ॡ



इ + ॅ = ई

ई



ईख

सेहा

ईख सरस बहु होत है देखत मांहि कठोर ॥
पोर पोर क्रमतें अधिक रस में होत न थोर ४

ल्ह = ‾ + ह + ल + ह









ए + ा + ॅ = ऐ



ऐला अर्थात् इलायची

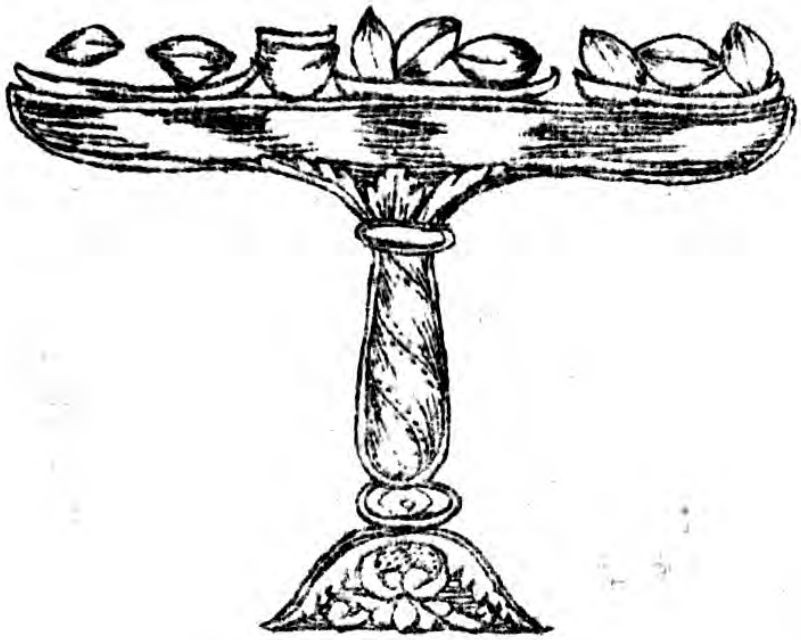

दोहा

एक भरोसे राम के किये पाप भर मोद ॥
जैसें सब जर जात हैं अग्नि तूल की पोद ॥



ए + ा + ॅ = ऐ



ऐला अर्थात् इलायची

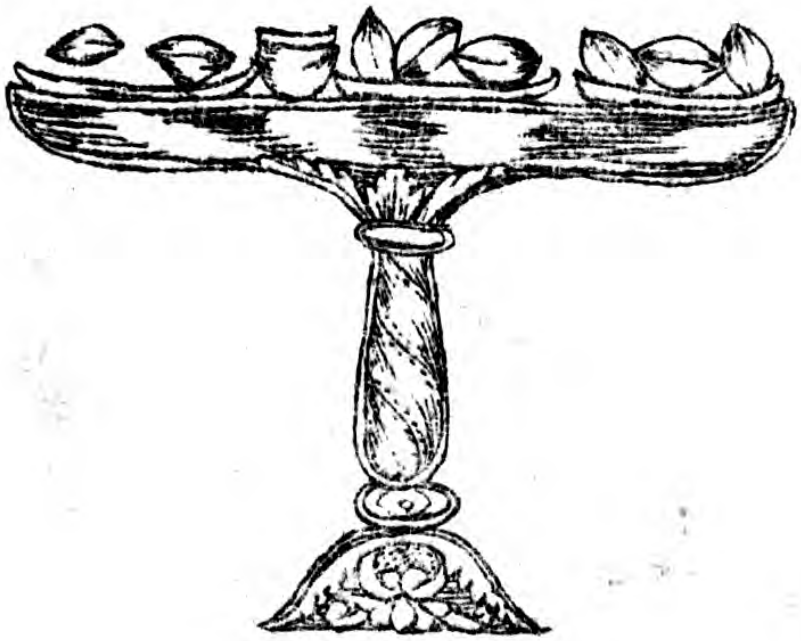

दोहा

एक भरोसे राम के किये पाप भर मोट ॥
जैसें सब जर जात हैं अग्नि तूल की पोट ॥

ए + ै = ऐ



दोहा

ऐसे हो कब लागिहो तुलसी के मन राम।
यथाकृपण निज द्रव्य को तजत नहीं एक याम

ग + ु + ् = गु



उत्पल अर्थात् कमल

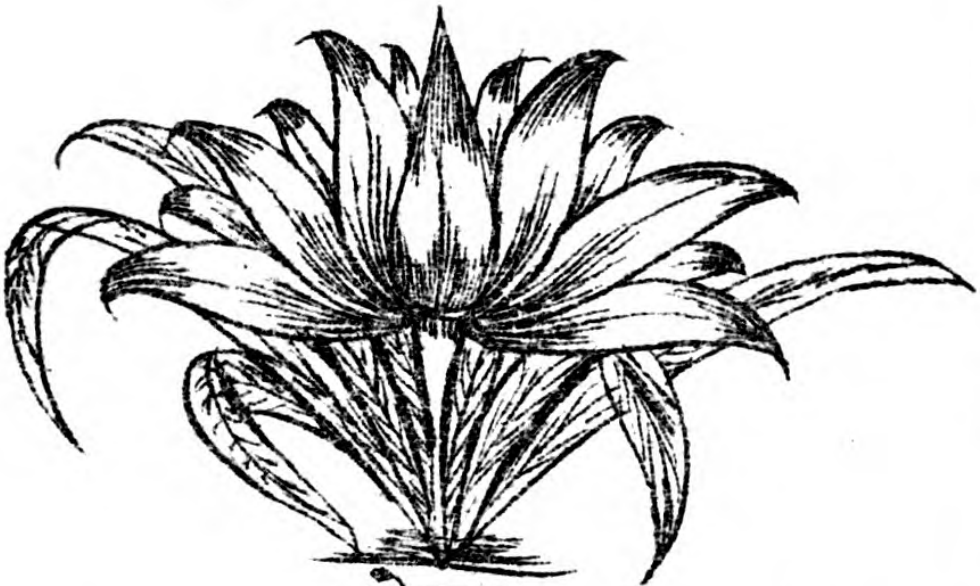

दोहा

उत्तम विद्या लीजिये। यदपि नीच पर होय।
सुन्दर मणि को लेतहै। यथा सर्प सिर सोय ५

ए + ै = ऐ



दोहा

ऐसे हो कब लागिहो तुलसी के मन राम।
यथाकृपण निज द्रव्य को तजत नहीं एक याम

ग + ७ + ॅ = उ



उत्पल अर्थात् कमल



दोहा

उत्तम विद्या लीजिये। यदपि नीच पर होय।
सुन्दर मणि को लेतहै। यथा सर्प सिर सोय ५

उ + ा = ऊ

ऊ

ऊत बिलाव



दोहा

ऊंचे पद को चहत हैं। सब कोई मन मांहि।।
ऊन्नत पद तबही मिले जब न मनाजियमांहि

= + ⊢ + ८ + ‾ = ऋ

ऋ

ऋक्ष अर्थात् रीछ

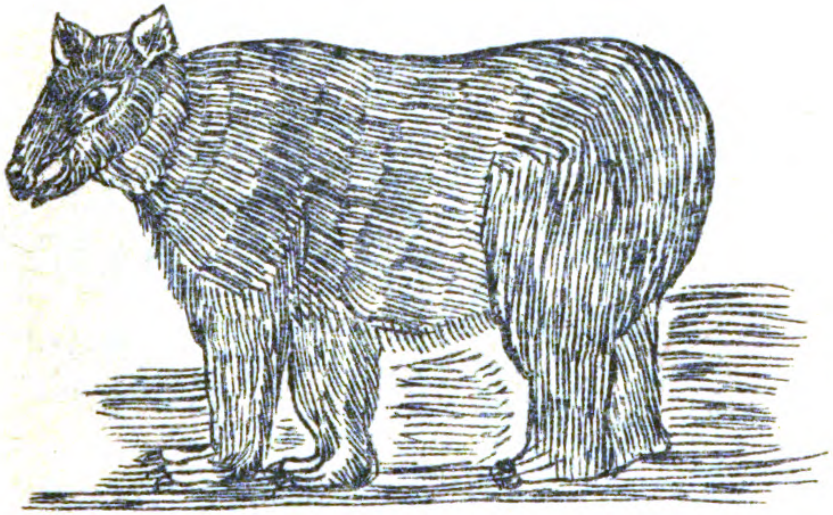

दोहा

ऋण कबहू नहिं लीजिये जो प्रभु पूरे आस।
ऋणिया को जग लोग सब करत महा उपहास ७

उ + ा = ऊ

ऊ

ऊत बिलाव



दोहा

ऊंचे पद को चहत हैं। सब कोई मन मांहि॥
ऊन्नत पद तबही मिले जब न मत्ता जिय मांहि

= + ⊢ + ८ + ‾ = ऋ

ऋ

ऋक्ष अर्थात् रीछ

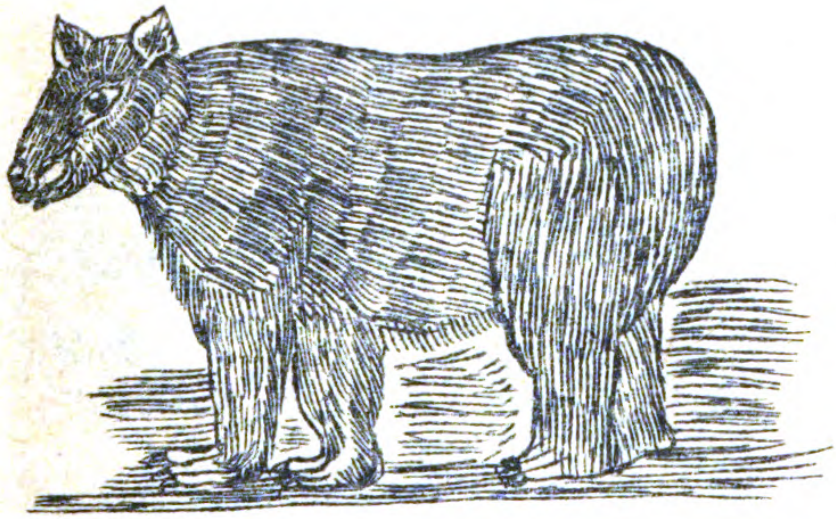

दोहा

ऋण कबहू नहिं लीजिये जो प्रभु पूरे आस।
ऋणियाको जग लोग सब करत महा उपहास ७

ऋ + ६ = ऋ६



दोहा

ऋ ॠ ऌ ॡ के शब्द नहिं भाषा संस्कृत जान।
जहां क हीं कोइ शब्द है सो संस्कृत ही मान ८

ओ + े = ओ



ओखली

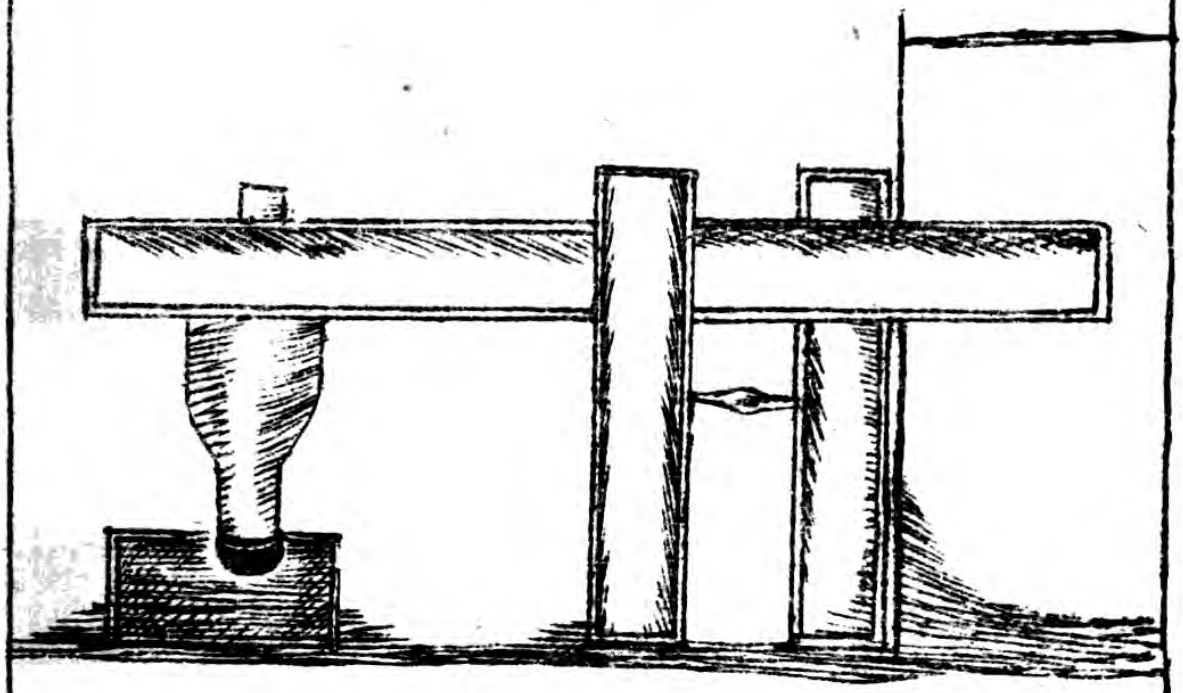

दोहा

ओस विन्दु मोती सदृश नलिनी दल में देख
ऐसी संगत बैठिये जामें होत सुभेख ॥

औ + ◌ = औ

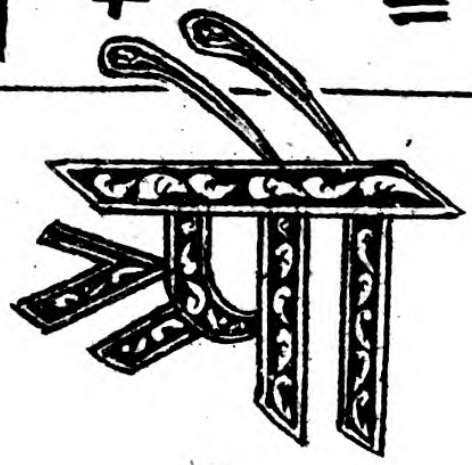

औरत



दोहा

औगुन कब हुंन कीजिये कीजे गुण की चाह
चाह गुणीकी जगत में सब को होत अथाह।

अ + ं = अं

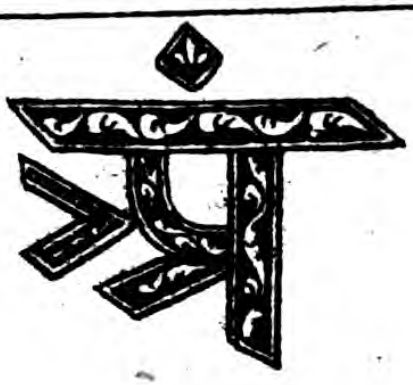

अंकुश



दोहा

अंबर डंबर सांऊ के ज्यों बालू की भीत ॥
एक पवन के जोर तें दूसर जल सों चीत ॥

अ + ः = अः

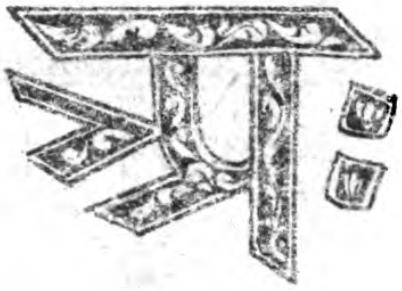



दोहा

अः देव सब जगत में मतलब ही के चोर
बिना गरज लरजै नहीं जंगल हू को मोर ॥

८ + । + ७ + ‾ = क



कछुआ



दोहा

करनी शुभ अरु प्रिय कथन सबही को सुखदानि
तातें प्रिय बाणी कहौ जग में हो सुख खानि।

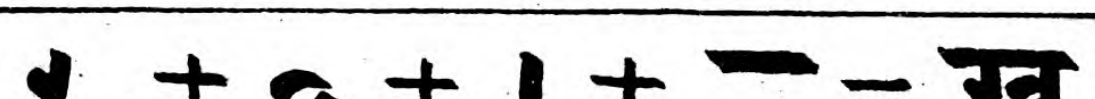



खर्गोश



दोहा

खरी बात तुम भाषियो चंचलता करि दूरि।
ताको फल अति पायहौ परिहर संशय भूरि॥

ग = ‾ + । + ᴅ

ग



गति के कारण तप करत ज्ञानी लोग अपार।
सांच बराबर तप नंही यही जगत में सार॥

ध + ा + ़ = घ



घड़ा



दोहा

घरी पलक करि जात है समय अमोल व्यतीत
भजन बिना सो सुफल नहिं कहत अनेक अतीत

८ + ७ + ‾ + ० = ङ

ङ



दोहा

ङ ञ ण न मा अनुनासिकहिं नासिकसहितउचा
र। तबइनकोउच्चारशुध मुख से होत विचार॥

— + ◡ + | + ¯ = च

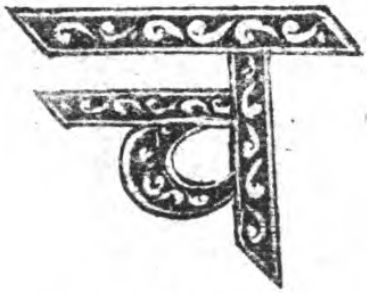

चकोतरा



दोहा

चरचा भगवत भजनकी श्रौरन कीजै तात ॥
याही में सब जगत की उत्तमता दरसात ॥

८ + ७ + ‾ = छ



छत्री



दोहा

छल नहिं काहूतें करो भलो कहैं सविवेक।
छड़ी गहौ ऐसी सदा जातें निर्भय लोक॥



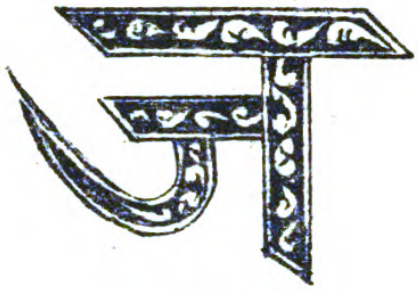

जलेबी

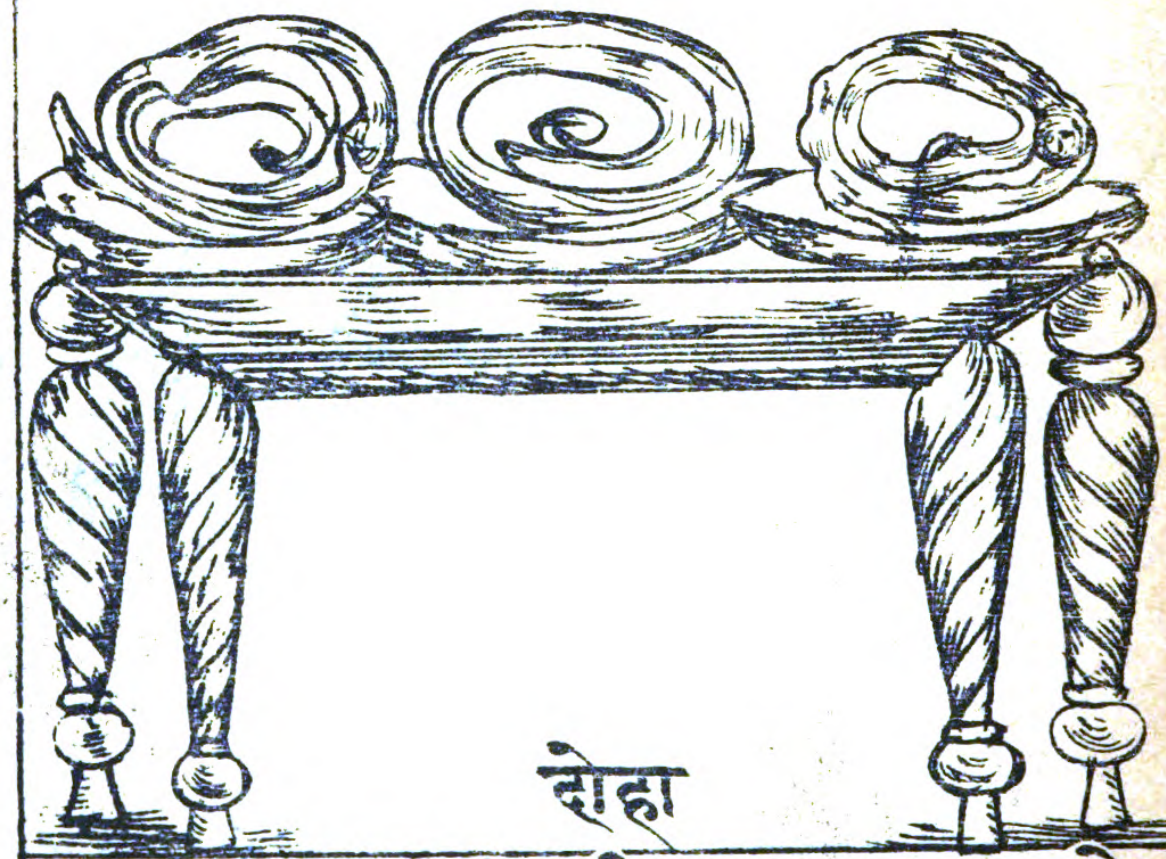

दोहा

जगत कूंठ अरु सांचकी हाट कहत सबजोय
पैसा अपनो डारिके कूठन बांधो कोय॥

र + — + । + ा + ‾ = झ

झ

झड़बेर



दोहा

झगड़ालूको जगत में निंद्य कहत सब संत
तातें झगड़ा मत करो जो शुभ चाहौ अंत ॥

७ + — + । + ‾ = ञ

ञ



दोहा

ञमङणनम्कोञम्सबै कहत सुपण्डित आर्य। सारस्वत के ग्रन्थमें कविअनुभूताचार्य।

ट + ॅ = टॅ

ट

टट्ट

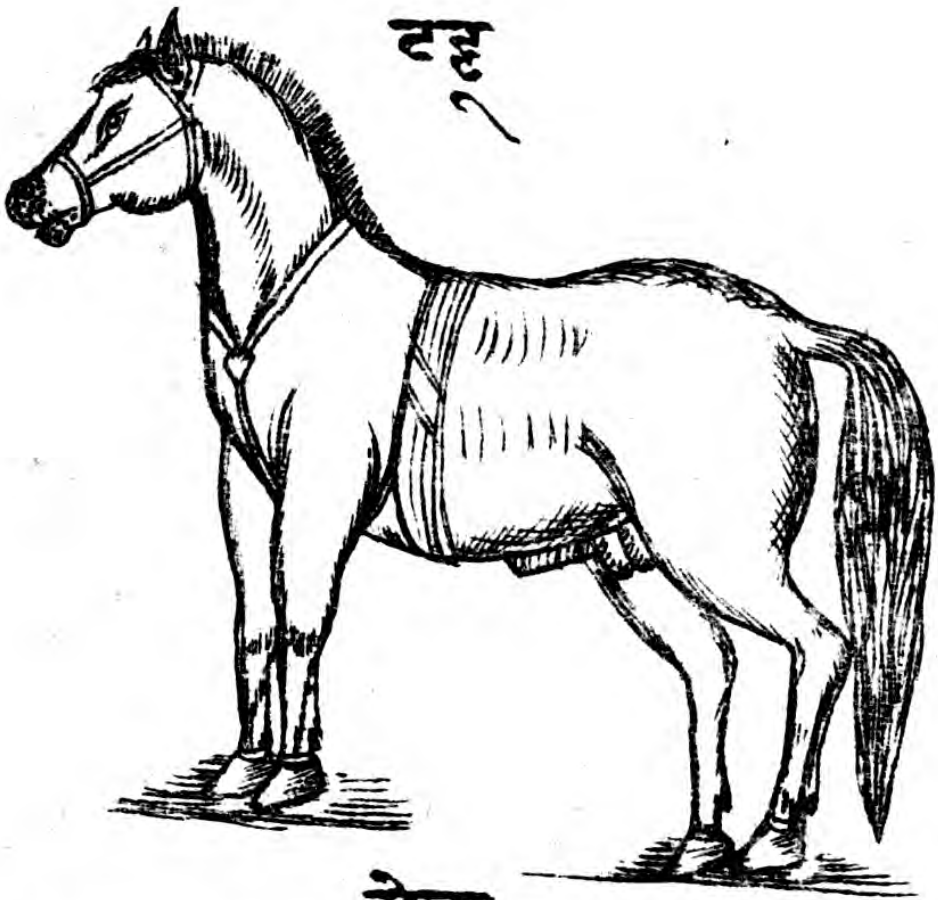

दोहा

टरतन विधि के अंक जो ललाट में लिखदिये
कबहू औरन होय सब गुण आगर कहगये

७ + — + । + ‾ = ञ

ञ



दोहा

ञमङणनम् को ञम् सबै कहत सुपण्डित आर्य। सारस्वत के ग्रन्थमें कवि अनुभूताचार्य।

ट + ‾ = ट

ट

टट्टू

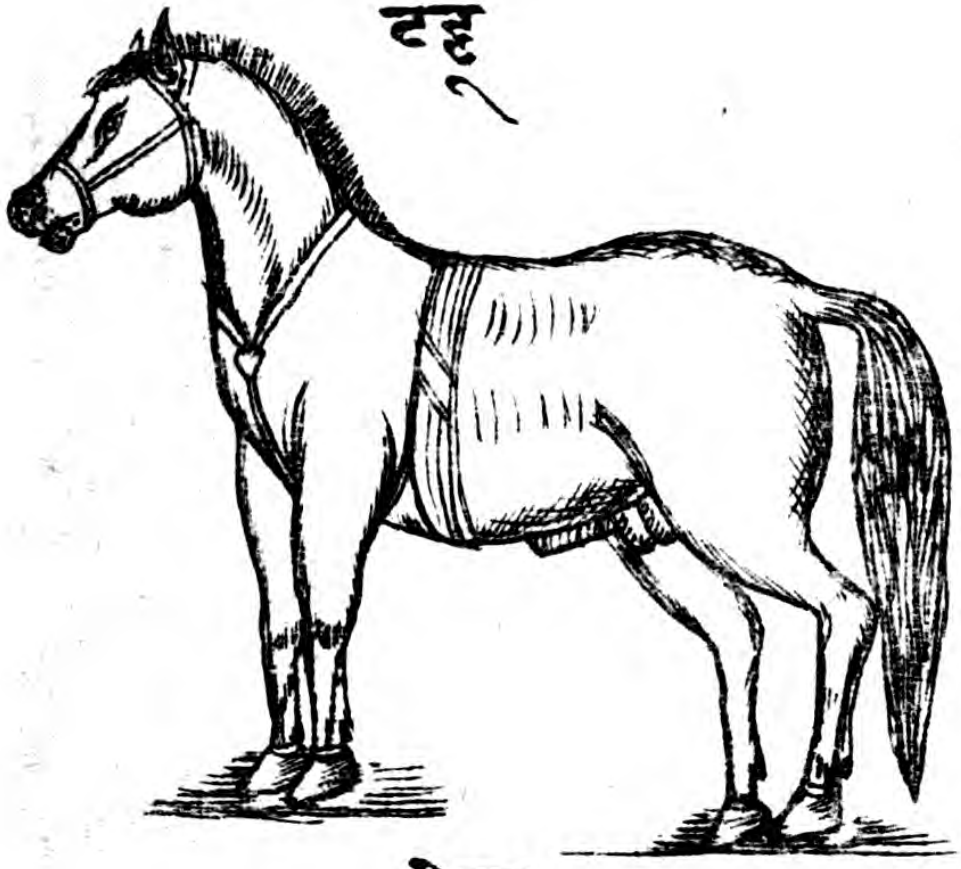

दोहा

टरतन विधि के अंक जो ललाट में लिख दिये
कबहू और न होय सब गुण आगर कहगये

ठ + ा = ठा



ठग



दोहा

ठानिजगत मेंटेकअस जसप्रल्हादसु कीन्ह।
नारद केउपदेशसे घोर तपस्या कीन्ह ॥ ॥

८ + ७ + ‾ = ड

ड

डला

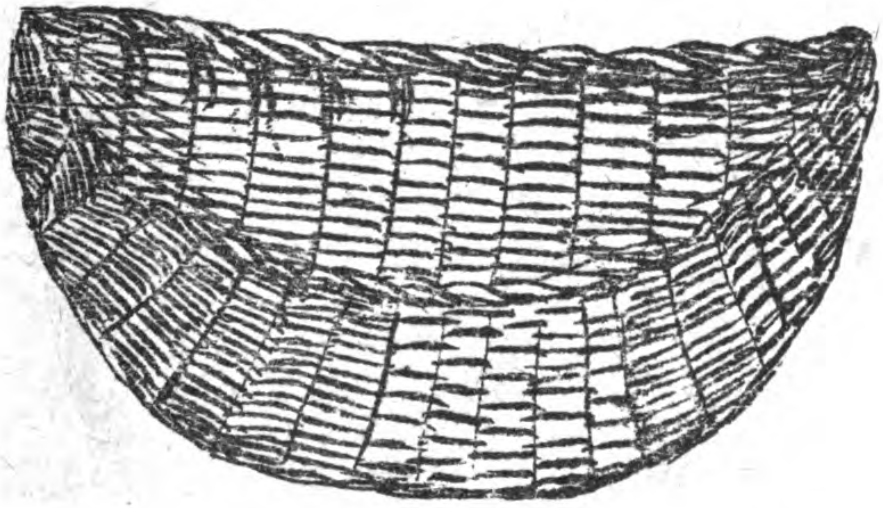

दोहा

डग मग चलिवौ है बुरो तुम जानों सर्बत्र ॥
गिरवे को भय रहत है पौरुष कर एकत्र ॥

८ + ७ + — = ढ



ढप

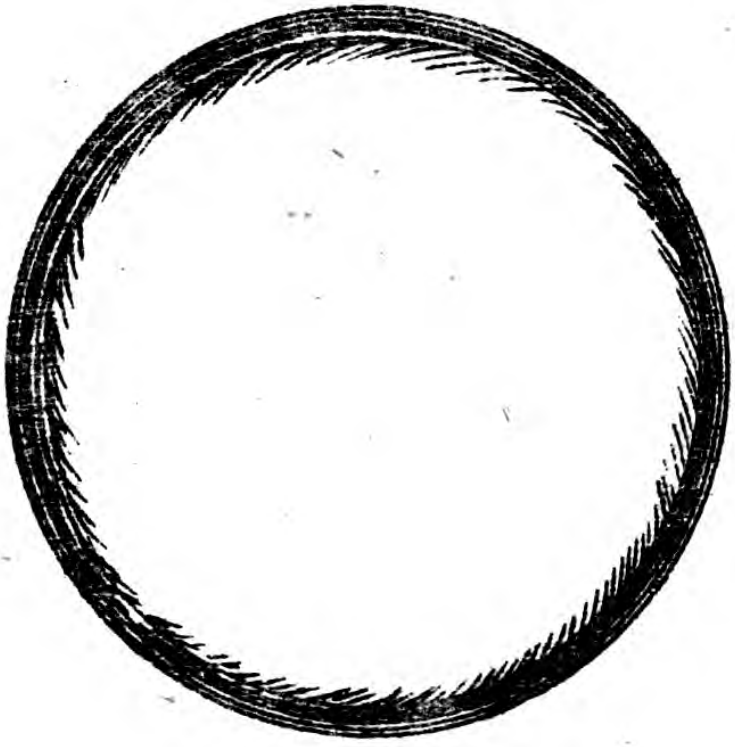

सोरठा

ढरकति प्रति दिन आयु रवि के सर कत छायजि
मि। तातें करो सुधर्म्म क्षण भंगुर यह देह किमि

ए + ॥ + ◌ = ण

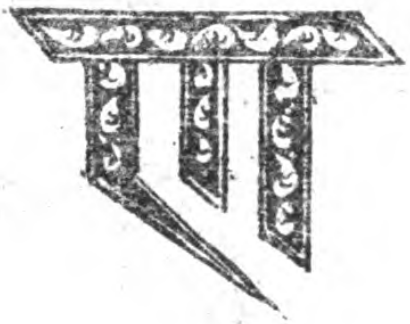



दोहा

णमो णमो करिबो भलो गुरु देव अरु विप्र ॥
अस करता नर कामना सिद्ध होत सो क्षिप्र ॥

ढ = ‾ + ७ + ८



ढप

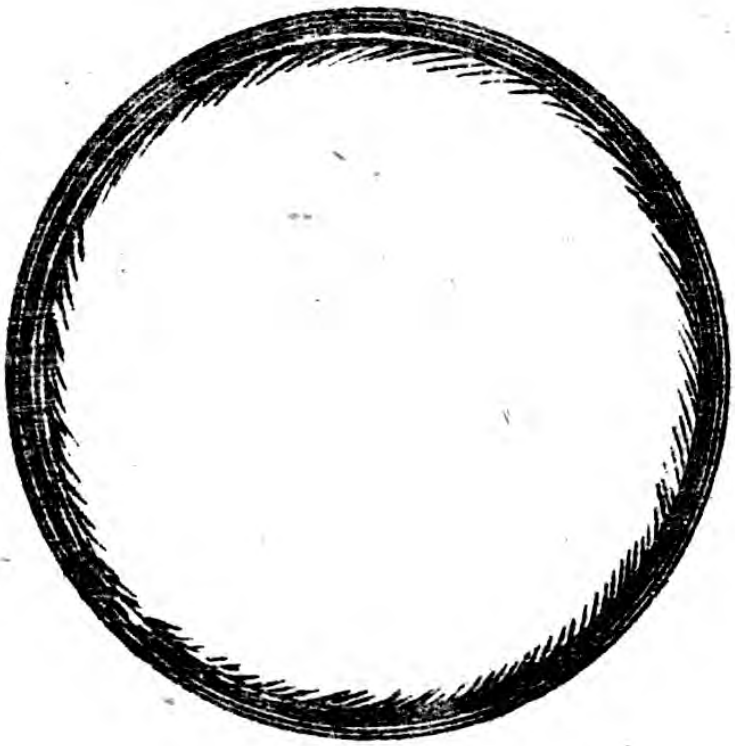

सोरठा

ढरकति प्रति दिन आयु रवि के सर कत छायजि
मि। तातें करो सुधर्म्म क्षण भंगुर यह देह किमि

ए + ॥ + ◌ = णं





दोहा

णमोणमो करिवोभलो गुरु देव अरु विप्र ॥
अस करता नर कामना सिद्ध होत सो क्षिप्र ॥

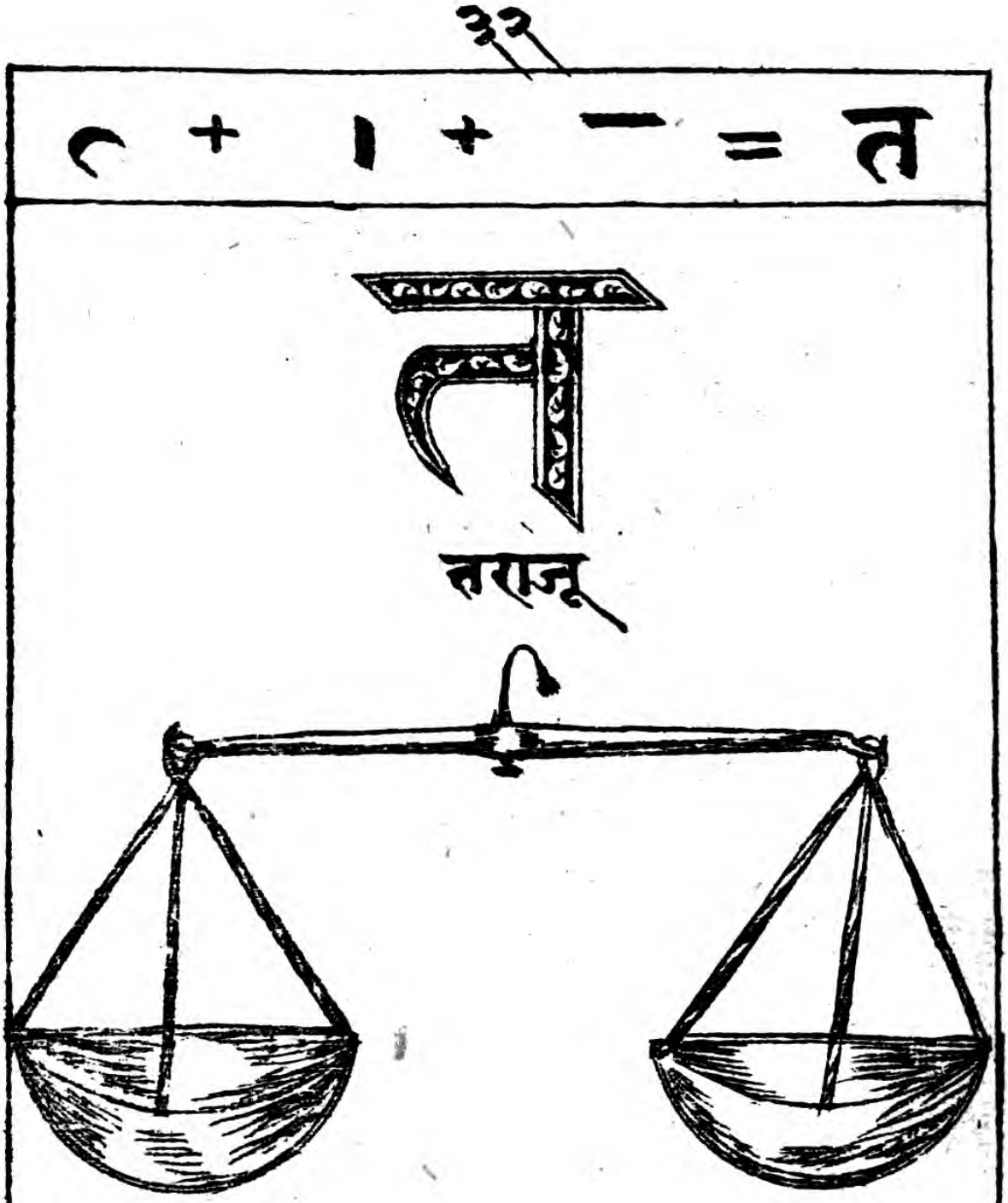

सोरठा

तनअभिमान न राख । जोतू चाहे धर्म नर ॥
गुरु को नावो माथ यही जगत में कर्मवर ॥

१ + ◡ + । + ‾ = थ



थवई



दोहा

थाथी कबहु नराखिये जो चाहै जग साख ॥
जाकी थाथी है धरी ताकों दीजै भाख ॥ ॥

८ + ० + — = द

द

दवात



दोहा

दर्शन गुरु अरु देव को करनों सायं प्रात ॥
दूर होंय सब दुखन तें निश्चय जानो तात ॥

२ + ८ + १ + — = ध

ध

धनुष

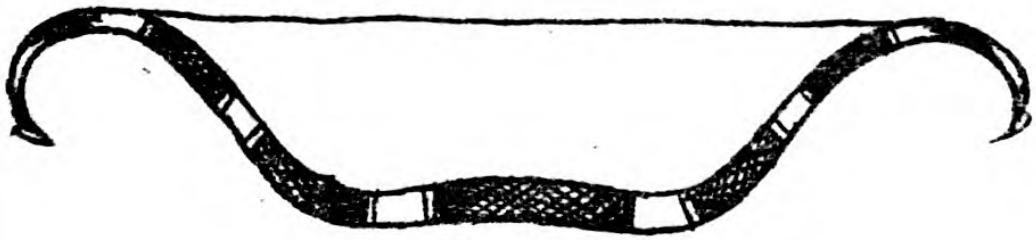

दोहा

धर्म्म बरा बर सुख नंही तीन लोक के मांहिं ॥
धर्म्म हितें सब मिलतहैं धन विद्या जग माहिं ॥

न + । + ‾ = न



नथ

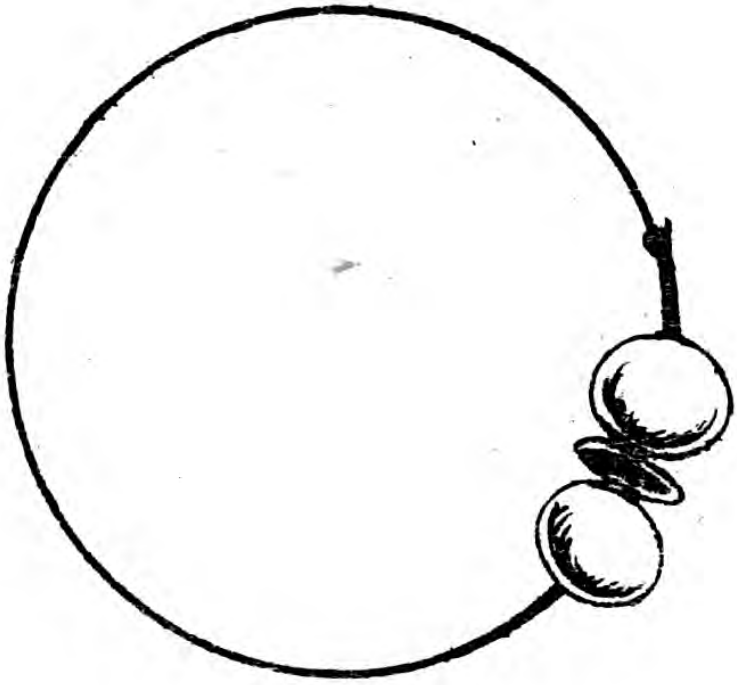

दोहा

नन्दनदन पद नेह करौ सदा सज्जन सुमन।
सब पुजिहैं मन काम वासुदेव आनन्द घन॥

ष + ा + ं = षं



पलंग

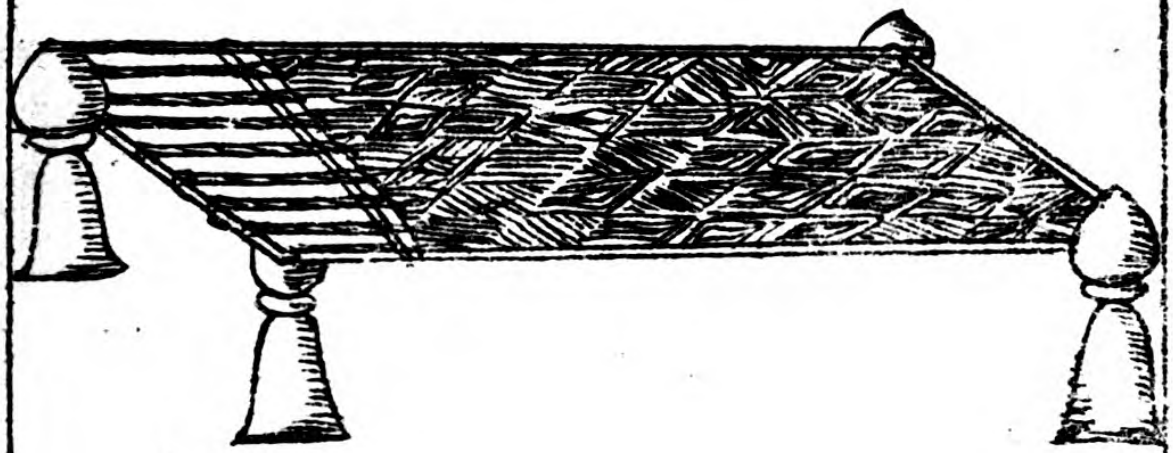

दोहा

पढ़िवो विद्या को भलो याजग मांहि अनूप।
विद्यादें नमता मिले अरु सुख चैन स्वरूप ॥

प + ा = फ



फकीर



फल विद्याको यही है जग में सबतें श्रुतिमन
फलेवृक्षनीचेशुकत तसविद्यातें सुजनजन।

ㄈ + । + ‾ = ब



सोरठा

बधौ काम अरु लोभ येही जग में अति दुखद
इन के बस जे होत नहिं तिन को जग है अति सुखद

भ + ◌ + ◌ + ◌ = भ

भ

भगवती



दोहा

भलेभल्यार्इ पैलहत । लहैं निचार्इ नीच ॥
सेवा संतन कीमहत करत दुःखकी कीच ॥

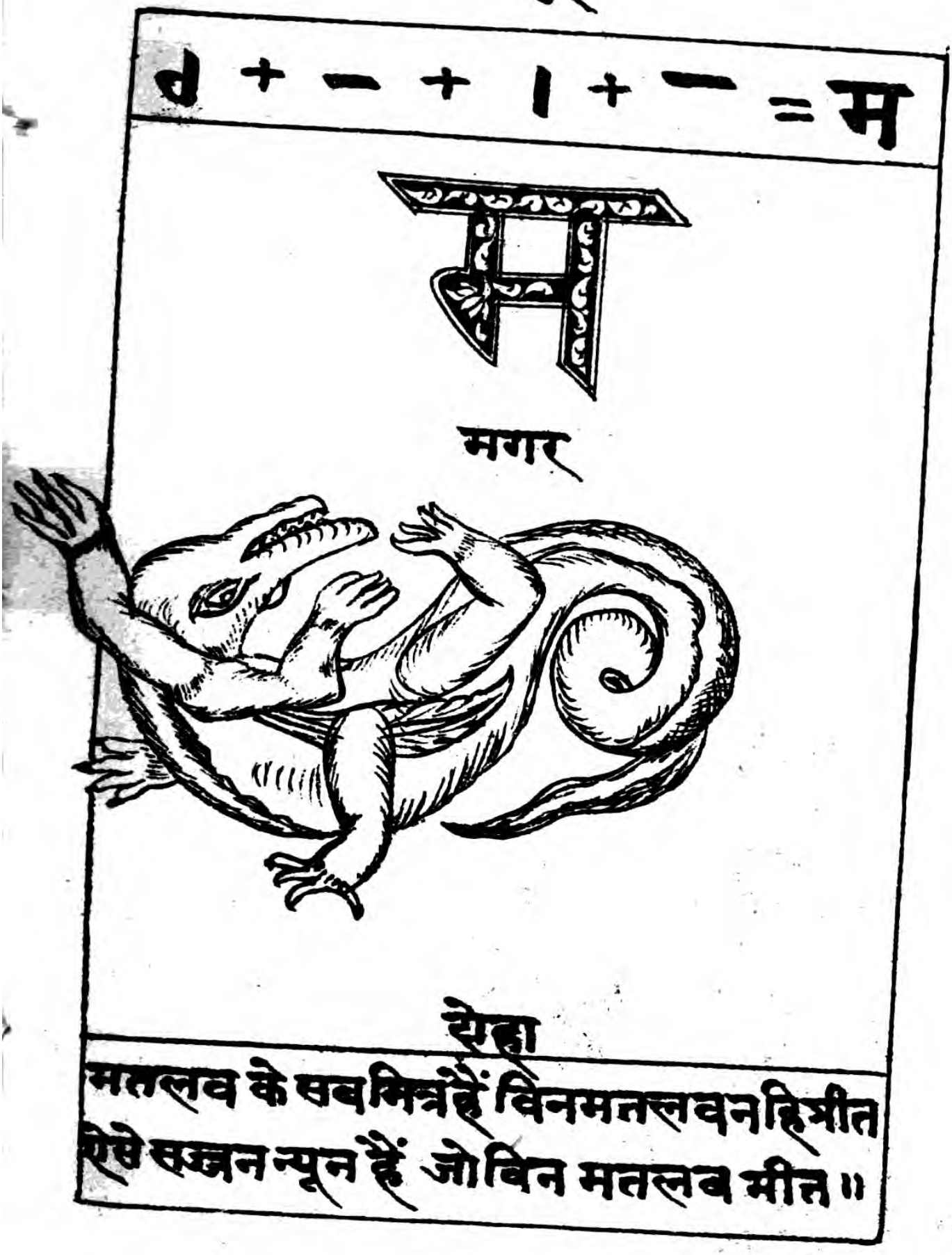

दोहा

मतलब के सब मित्र हैं विनमतलबनहिंमीत
ऐसे सज्जन न्यून हैं जोविन मतलब मीत ॥

२ + । + ¯ = य





दोहा

यश को संग्रह कीजिये यश ही में रस होत ॥
जो या रस में मगन हैं ते जग होत उदोत ॥

ा + ् + ‾ = र



रथ



दोहा

रस के लेनें में सदा भ्रमर रूप मन काम
जो गुण कों तुमलेउगे तौ गुण ज्ञ जग नाम।

९ + ० । + ‾ = ल

ल

लखौट



दोहा

लक्षणतें सबजगतमें भले बुरे को ज्ञान ॥
तातें लक्षण शुभगहौ जो चाहौ कल्यान ॥

८ + । + ‾ = व

व

वहेल

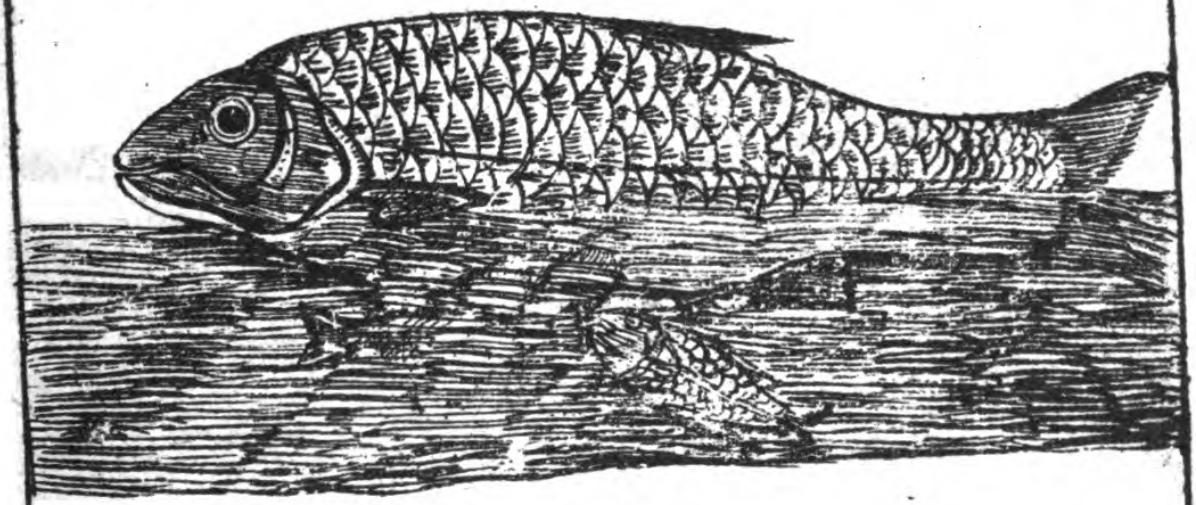

दोहा

वर विद्या तें नम्रता होत सु कीर्त्तिललाम
तातें विद्या सीखिवौ श्रेष्ट जगत में काम॥

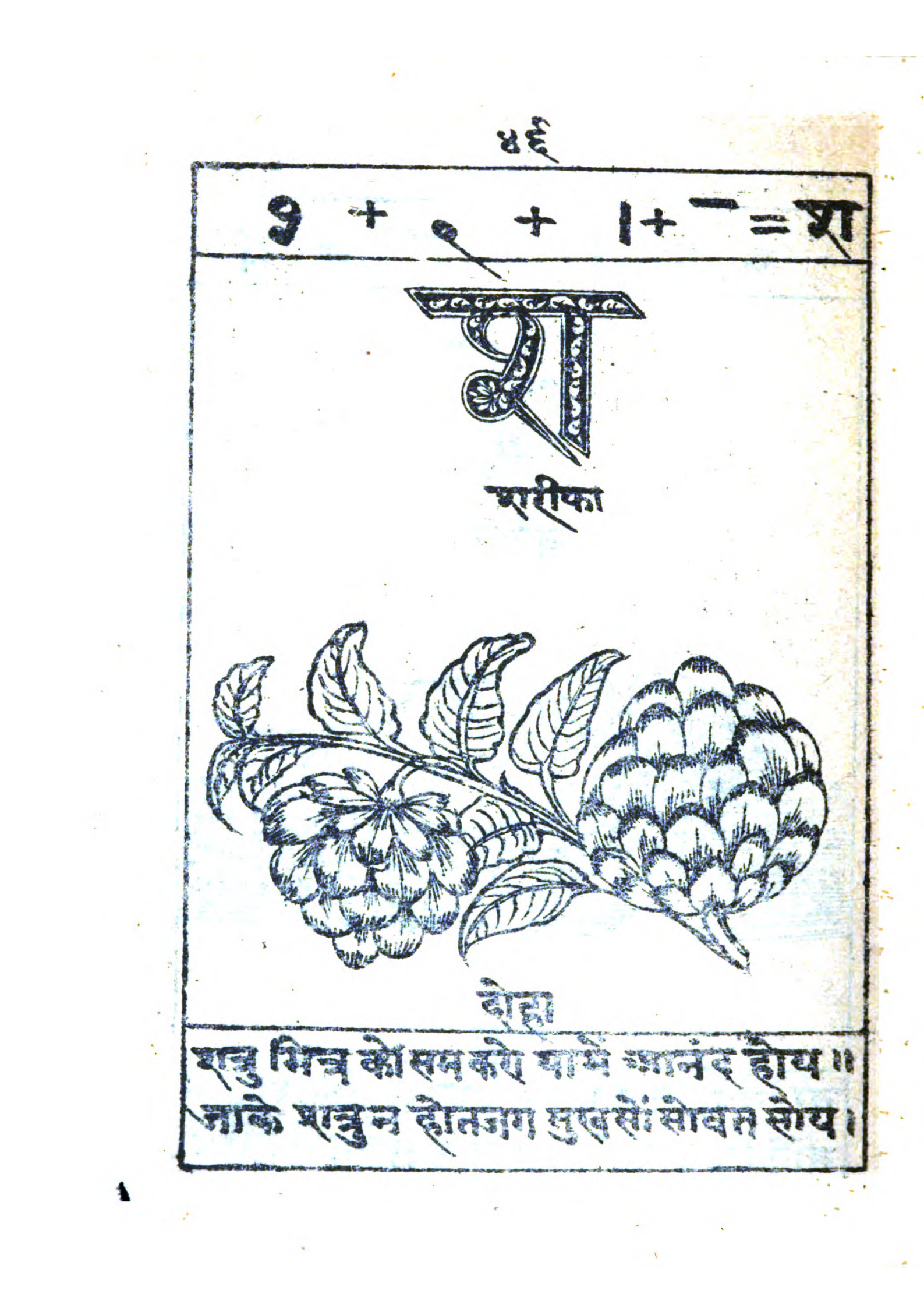

श

शरीफा

दोहा

शत्रु मित्र को सम करो यामें आनंद होय ॥
जाके शत्रु न होत जग सुख सों सोवत सोय ।

ᒪ + ⸝ + | + ‾ = ष



षट्पद अर्थात् भौंरा

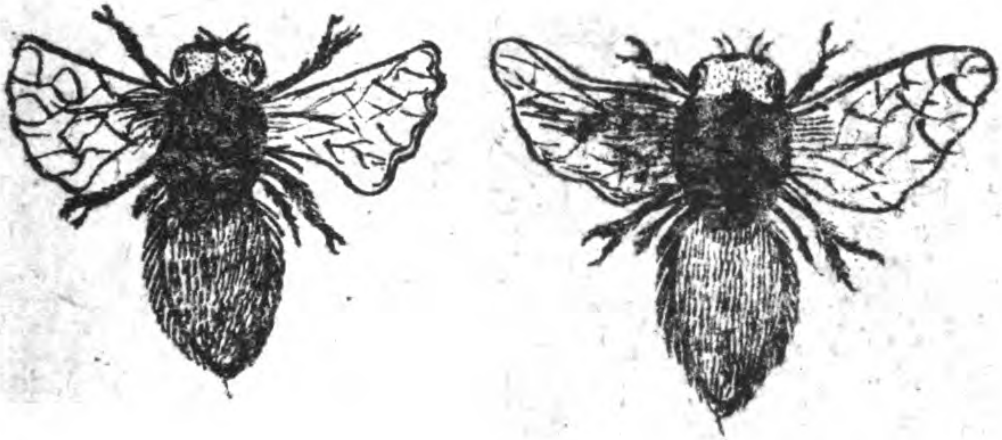

दोहा

षट्विधिके सब शास्त्र इन को पढ़िबौ है भ
लौ। रावत जन्म करि लेउ यही जगत में अति भ
लौ॥

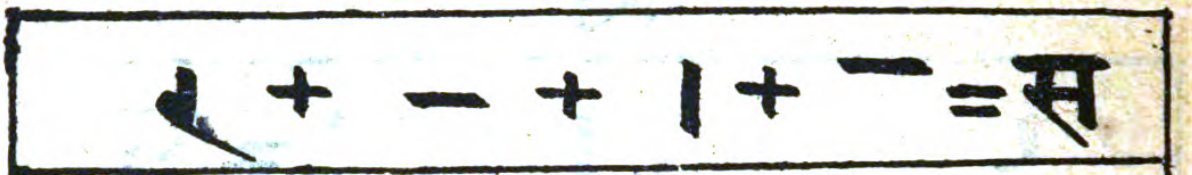

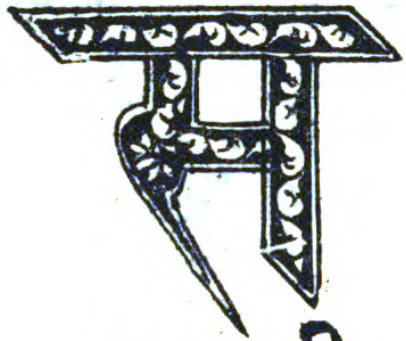

सरस्वती



दोहा

सबतेलघुमसमसहुतें रजकनपुनिपरमानु
परमानहुतेंगुनरहित जानतजिनहिंजहान

ा + ८ + ७ + ९ + ‾ = ह

हनुमान्



दोहा

हरि ढूंढन ब्रज में गई पाये गिरिधर लाल।
व्याह कियौ सुख हेतु सों देत सुकीया बाल॥

ह + ९ + — + । + ‾ = क्ष

क्ष

क्षेत्र

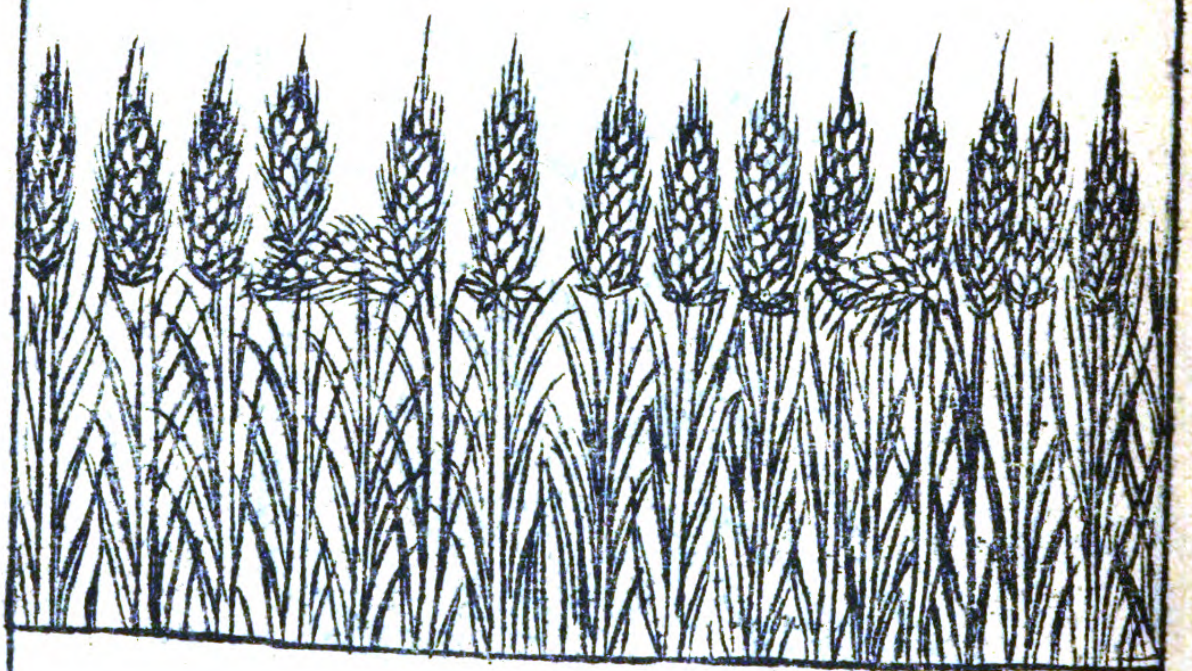

दोहा

क्षमियचूक अज्ञानकीहित अनहित नहिंज्ञान
तातें बालक चूक पर पण्डित धरत न ध्यान॥

= + । + ‾ = त्र

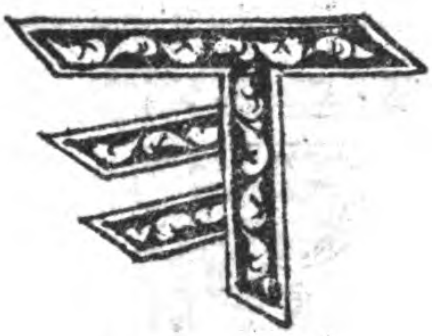

त्रिफला

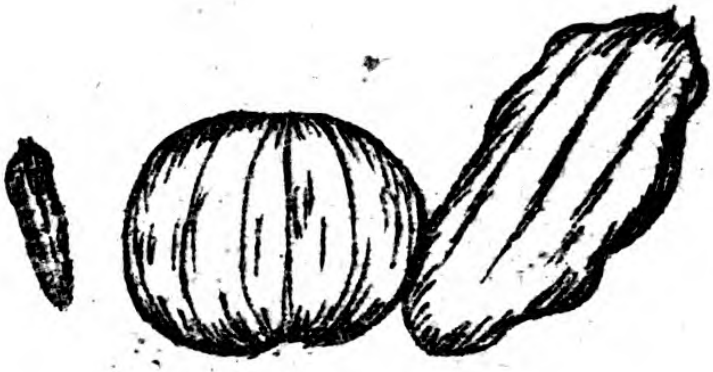

दोहा

त्राता जग में एक है । अबिनासी कर्तार ॥
दूसर भूपन जानियो वही जगत भर्तार ॥

ज्ञ + ् + ञ + ् = ज्ञ

ज्ञानी



दोहा

ज्ञान शक्ति प्रभुनेदई पशुपक्षिण हूंमांहि।
बुद्धि एक मानुष दई। श्रेष्ठ सुजीवन मांहि॥

देवनागरी वर्णमाला में ४९ अक्षर हैं उन के दो भद हैं स्वर और व्यंजन स्वर वे कहाते हैं जो आप बोले जांय और व्यंजनों को सहायता दें और व्यंजन अर्थात् हल् वे कहाते हैं जो बिना स्वर की सहायता मुख से न बोले जांय॥

स्वर

अआ इई उऊ ऋॠ

ऌॡ एऐ ओऔ अंअः

स्वर अक्षर ह्रस्व दीर्घ प्लुत के भेद से तीन प्रकार के हैं- यथा एक मात्रा को ह्रस्व और दो मात्रा को दीर्घ, और तीन मात्रा को प्लुत बोलते हैं-

ह्रस्व स्वर

अ इ उ ऋ ऌ

ज्ञ + ् + ञ + ा = ज्ञा

ज्ञानी



दोहा

ज्ञान शक्ति प्रभुनेदई पशुपक्षिण ढूंमांहि।
बुद्धि एक मानुष दई। श्रेष्ठ सुजीवन मांहि॥

देवनागरी वर्णमाला में ४९ अक्षर हैं उन के दो भद हैं स्वर और व्यंजन स्वर वे कहाते हैं जो आप बोले जांय और व्यंजनों को सहायता दें और व्यंजन अर्थात् हल् वे कहाते हैं जो बिना स्वर की सहायता मुख से न बोले जांय॥

स्वर

अआ इई उऊ ऋॠ
ऌॡ एऐ ओऔ अंअः

स्वर अक्षर ह्रस्व दीर्घ प्लुत के भेद से तीन प्रकार के हैं- यथा एक मात्रा को ह्रस्व और दो मात्रा को दीर्घ, और तीन मात्रा को प्लुत बोलते हैं-

ह्रस्व स्वर

अ इ उ ऋ ऌ

दीर्घस्वर

आ ई ऊ ऋ ऌ ए ऐ
ओ औ अं अः

प्लुत

आ३ ई३ ऊ३ इत्यादि

ह्रस्व के उच्चारण में थोड़ा समय लगता है- ह्रस्व से दूना काल दीर्घ के उच्चारण में होता है- प्लुत वहाँ बोलाजाता है जहाँकिसी को दूरसे पुकारते हैं तोउसका जो २ अक्षर तानके बोलते हैं उसी का अंत्यस्वर प्लुत हो जाता है- यथा अरेगोपाला३ यहाँ गोपाला में ला को तान कर बोला इसी कारण ला में जो दीर्घ आ है वह प्लुत हुआ, प्लुत का कोई

स्वरूप नहीं है इससे दीर्घ के आगे तीन का अंक बना देते हैं, यथा गोपाला ३ स्वरों का दूसरा स्वरूप मात्रा है, मात्रा का अर्थ प्रमाण अर्थात् अन्दाज़ा है, जब स्वर व्यंजनों को सहायता देता है तो मात्रा की सूरत बनजाता है—

मात्रा

ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

ं ः ँ ़ ्

व्यंजनों के भेद

क ख ग घ ङ - कवर्ग - इन में प्रत्येक कवर्गी कहाता है—

च छ ज झ ञ - चवर्ग - इन में प्रत्येक चवर्गी कहाता है—

ट ठ ड ढ ण - टवर्ग - इन में प्रत्येक टवर्गी कहाता है—

त थ द ध न- तवर्ग- इन में प्रत्येक तवर्गी कहाता है-

प फ ब भ म- पवर्ग- इन में प्रत्येक पवर्गी कहाता है-

य र ल व- अन्तःस्थ- इन में प्रत्येक अन्तः स्थी कहाता है-

श ष स ह- ऊष्म - इन में प्रत्येक ऊष्म स्थानी कहाता है-

क्ष त्र ज्ञ - युक्ताक्षर- इन में प्रत्येक युक्ताक्ष र कहाता है-

इन अक्षरों को पाटी पर लिखवाना चाहिये

क्ष·त्र·ज्ञ- ये युक्ताक्षर हैं परन्तु वर्णमाला में इस कारण लिखे जाते हैं कि इन के रूप में योग से अन्तर हो जाता है-

क्ष=क+ष, त्र=त+र॥ ज्ञ=ज+ञ,॥

ड और ढ के नीचे बिन्दी लगाने से ड़ और

ढ़ बोले जाते हैं-

व्यंजनो का मुख्य स्वरूप

क् ख् ग् घ् ङ्. । च् छ् ज् झ् ञ् । ट् ठ् ड् ढ् ण् । त् थ् द् ध् न् । प् फ् ब् भ् म् । य् र् ल् व् । श् ष् स् ह्- क्ष् त्र् ज्ञ्-

इन में कोई स्वर नहीं है परन्तु जब इन में ह्स (अ) लगा देते हैं तो इन का स्वरूप ऐसा होना चाहै यथा

क ख ग घ ङ- च छ ज झ ञ- ट ठ ड ढ ण- त थ द ध न- प फ ब भ म- य र ल व- श ष स ह- क्ष त्र ज्ञ-

जब ऐसा स्वरूप होता है तभी मुख से बोले जाते है-

स्वरों का पूर्ण रूप ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ

ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

ऋ ॠ ऌ ॡ हिन्दी में नहीं आते ॥

स्वरों का दूसरा स्वरूप

ा ि ी ु ू े ै ो ौ ं ः

जब स्वर व्यंजनों को सहायता नहीं देते तब पूर्ण स्वरूप से लिखे जाते—

जब व्यंजनों को सहायता देते हैं तब मात्रा रूप हो जाते हैं—

जब व्यंजनों में मात्रा का योग होता है तब उन को सस्वर अर्थात् मात्रा सहित बोलते हैं—

व्यंजन और मात्रा का योग

क् + (अलुप्त) = क, ख, ग, इत्यादि ऐसे ही और भी जानो—

क + ा = का, खा, गा, इत्यादि ऐसे ही और भी जानो—

क + ि = कि, खि, गि, आदि ऐसे ही और भी जानो—

क + ी = की, खी, गी, आदि ऐसे ही और भी जानो-

क + ु = कु, खु, गु, आदि ऐसे ही और भी जानो-

क + ू = कू, खू, गू आदि ऐसे ही और भी जानो-

क + े = के, खे, गे, आदि ऐसे ही और भी जानो-

क + ै = कै, खै, गै, आदि ऐसे ही और भी जानो-

क + ो = को, खो, गो, आदि ऐसे ही और भी जानो-

क + ौ = कौ, खौ, गौ, आदि ऐसे ही और भी जानो-

क + ं = कं, खं, गं, आदि ऐसे ही और भी जानो-

क + ः = कः खः गः आदि ऐसेही और भी जानो-

व्यंजन और स्वर के योग से बारह खड़ीहोती है इस लिये, कि ऋ ॠ ऌ ॡ छोड़ कर स्वर १२ बारह हैं ॥ विद्यार्थिनी ये बारह खड़ी पाटी पर लिखा करें-

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः
ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः
ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः
घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः
ङ ङा ङि ङी ङु ङू ङे ङै ङो ङौ ङं ङः
च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं चः
छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ छं छः
ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं जः
झ झा झि झी झु झू झे झै झो झौ झं झः
ञ ञा ञि ञी ञु ञू ञे ञै ञो ञौ ञं ञः

ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः

र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः
ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः
व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः
श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ शं शः
ष षा षि षी षु षू षे षै षो षौ षं षः
स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः
ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः
क्ष क्षा क्षि क्षी क्षु क्षू क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः
त्र त्रा त्रि त्री त्रु त्रू त्रे त्रै त्रो त्रौ त्रं त्रः
ज्ञ ज्ञा ज्ञि ज्ञी ज्ञु ज्ञू ज्ञे ज्ञै ज्ञो ज्ञौ ज्ञं ज्ञः

देहाती शहरों की हिन्दी-चटशालों में नीचेकी रीति से गुरु शिक्षा करते हैं—

क	क	मिन	क
कन्नों	का	बड़ेलम	कू
मच्छे	कि	इकलख	के
घड़ियल	की	दोलख	कै

लज्जा	को	मस्ते	कं
दुलावर	कौ	दुवास कक्का दो बिन्दी दोसे बड़ा	कः

(अलुप्त)

क, घ, च, छ, ज, ट, ढ, त, ध, प, य, श,

कर घर चल छल जल टल
ढल तब धन पल यश शश

(T)

का चा टा ता पा या शा
काल चाल टाल ताल पान यान शाल

(f)

ति खि दि मि सि पि फि
तिल खिल दिल मिल सिल पिल फिर

(१)

की खी ग्री नी भी गी धी

कील खील ग्रीन नील भील गीत धीर

(२)

कु, खु, ग्रु, फ्रु, गु, घु, धु,

कुल खुल ग्रुर फ्रुर गुरु घुल धुर

(३)

क्रू, ग्रू, कू, कू, बू, टू, ख्रू,

क्रूत ग्रूत कूत कूत बूत टूल ख्रूल

(४)

खे, से, चे, भे, रे, क्षे, ते,

खेत सेतु चेत भेर रेत क्षेत्र तेल

(५)

चै, वै, खै, पै, तै, सै, गै,

चैन बैन खैर पैर तैर सैर गैर

(ो)

चो, तो, पो, ढो, श्णे, डो, घो,
चोर तोल पोल ढोल श्णेच डोल घोल

(ौ)

कौ, पौ, तौ, धौ, गौ, डौ, हौ,
कौल चौर तौर धौल गौर डौल हौल

(ं)

कं, वं, नं, चं, छं, ठं, डं, पं,
कंस वंश नंद चंद्र छंद ठंड डंड पंच

(ः)

छः दुः कः
दुःख

लघु वाक्य

चल कर घरकी टहल कर, कुल बल न कर,
पलभर ठहर, जलभर, रथपर चढ़, हठ न कर;

(ट)

काल आया, चाल चला, पाला पड़ा, पानला, शालाजा, ताल मत बजा, यात्रा कर, पाठ याद कर

(ठ)

तिलला, सिल पर रख, हिल मिल काम कर, दिल मत चला, खिड़ का बन्द कर, रिस मत कर

(ड)

चक्की की कील बना, धान की खीलला, गीत मत खा, भीलआया, नीलका रंग बना, गीत गा, धीर धर,

(ढ)

कुल वंती हो, पुल पर मतजा, गुरु से लज्जा कर घुल मतजा, गुल मत कर, घर का धुर उठा,

(ण)

सूतकात, पूतपढ़ा, कूत मत कर, कूत कर भाव कर, बूत भर उठा, दूल की साड़ी बना,

शूल की दवा कर,

ऐ

खेत पर जा, सेतुबन्ध के दर्शन कर, चेत से रह, भेद मत खोल, रेत पर न लोट, तेल भर ला, क्षेत्र पाल की पूजा कर,

ओ

चैन से रह, बैन मत बजा, खैर मत रख, पैरपै पैर मत रख, सैर मत कर, ग़ैर से न बद, पानी पर न तैर, अपनी ख़ैर मना,

औ

चोरी मत कर, तोल पूरी कर, पोल न रख, ढ़ोल मत बजा, शोच मत कर, डोल को सुधार, गोल मोल बात मत कर,

अं

कौल पूरा कर, पौर को सुधार, मौर अच्छा रख, - धौल मत मार, ग़ौर कर देख, डौल डाल डाल, दौड़

मत कर, बोल न कर,

—:—

कंस अन्यायीथा, वंश में अब तंश हो, नंद नंदन में प्रीति कर, चन्द्र शीतल होता है, छंद पढ़ना श्रेष्ठ है, ठंड से बच, पंच को न्याय उचित है,

—:—

ऊः ऋतु होती हैं, दुःख से देह निर्बल होजाता है,

हलकायोग

योगके अक्षर		शब्द	योगके अक्षर		शब्द
व्+ऋ	व्र	व्रद्धि	द्+ऋ	द्र	द्रष्टि
क्+ऋ	क्र	क्रपा	म्+ऋ	म्र	म्रदु
त्+ऋ	त्र	पित्र	भ्+ऋ	भ्र	भ्रत्य
प्+ऋ	प्र	प्रथ्वी	न्+ऋ	न्र	नृत्य
ग्+ऋ	ग्र	ग्रह	क्+र	क्र	क्रम

भ्+र भ्र भ्रम द्+र द्र द्रिद्री
प्+र प्र प्रथम ब्+र ब्र ब्राह्मण
ग्+र ग्र ग्रह श्+र श्र श्रम
न्+र न्र न्रना

संयोगी हल

संयोगी हलों में बहुधा य॰ व॰ र॰ ल॰ इन चार अक्षरों में सब व्यंजनों के मिलाने की आवश्यकता होती है उन की मिलावट नीचे लिखते हैं

क्य ख्य ग्य घ्य ङ्य।च्य छ्य ज्य झ्य ञ्य
ट्य ठ्य ड्य ढ्य ण्य।त्य थ्य द्य ध्य न्य
प्य फ्य ब्य भ्य म्य।य्य ल्य ल्य व्य श्य
ष्य स्य ह्य क्ष्य त्र्य ज्ञ्य।

क्व ख्व ग्व घ्व ङ्व।च्व छ्व ज्व झ्व ञ्व
ट्व ठ्व ड्व ढ्व ण्व।त्व थ्व द्व ध्व न्व
प्व फ्व ब्व भ्व म्व।य्व र्व ल्व श्व ष्व

ष्व स्व ह्व क्ष्व त्र्व ज्ञ्व

क्र ख्र ग्र घ्र ङ्र। च्र छ्र ज्र झ्र ञ्र

ट्र ठ्र ड्र ढ्र ण्र। त्र थ्र द्र ध्र न्र

प्र फ्र ब्र भ्र म्र। य्र र्र ल्र व्र श्र

ष्र स्र ह्र क्ष्र

क्ल ख्ल ग्ल घ्ल ङ्ल। च्ल छ्ल ज्ल झ्ल ञ्ल

ट्ल ठ्ल ड्ल ढ्ल ण्ल। त्ल थ्ल द्ल ध्ल न्ल

प्ल फ्ल ब्ल भ्ल म्ल। य्ल र्ल ल्ल व्ल श्ल

ष्ल स्ल ह्ल क्ष्ल त्ल ज्ञ्ल

द्वित्व अक्षरों का स्वरूप।

अक्षर	रूप	शब्द	अक्षर	रूप	शब्द
क्+क	क्क	हुक्का	च्+च	च्च	कच्चा
क्+ख	क्ख	रक्खा	च्+छ	च्छ	अच्छा
ग्+ग	ग्ग	बग्गी	ज्+ज	ज्ज	लज्जा
घ्+घ	घ्घ	मघ्घा	झ्+झ	झ्झ	मझ्झा

अक्षर	रूप	शब्द	अ
ट् + ट	ट्ट	खट्टा	त्
ट् + ठ	ट्ठ	लट्ठा	त्
ड् + ड	ड्ड	अड्डा	द्
ढ् + ढ	ढ्ढ	बुढ्ढा	घ्
			न्

अक्षर	रूप	शब्द	अ
प् + प	प्प	गप्प	य्
प् + फ	प्फ	गप्फा	र्
ब् + ब	ब्ब	धब्बा	ल्
भ् + भ	भ्भ	गभ्भर	व्
म् + म	म्म	अम्मा	

अक्षर	रूप	शब्द	अ
श् + श	श्श	कश्शेते	स्
ष् + ष	ष्ष	धुष्षा	ह्



व्यंजनों के योग का प्रकार

व्यंजन अक्षरों के स्वरूप दो प्रकार से लिखे जाते हैं (१) खड़ी पाई समेत यथा ख, ग, घ, च, ज, ण, त, थ, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, ष, ष, स, (२) बिना खड़ी पाई के- यथा क, झ, ड, छ, ठ, ट, ड; ढ, द, र, ह, खड़ी पाई के अक्षर जब किसी अक्षर में मिलते हैं तो वे अपने आधे स्वरूप से मिलते हैं परन्तु अन्त का अक्षर जिस में कि खड़ी पाई वाला मिलता है वह चाहे खड़ी पाई वा बेखड़ी पाई वाला कैसाही हो पूरेही रूपसे बना रहता है- यथा पुष्प, नष्ट, इन में दोनों प्रकार सीखते हैं और बिना खड़ी पाई वालों में एक र अक्षर जब किसी अक्षर व्यंजन में मिलता है तो उस के

सिर पर मिलता है- यथा- सर् + प = सर्प ॥ उस अवस्था में इस को रेफ बोलते हैं परन्तु जब किसी ख़ाली स्वर में मिलता है तो ऊपर नहीं जाता बराबर में जाकर सस्वर होजाता है- यथा निर् + आस = निरास और इस के विशेष और बे खड़ी पाई वाले अक्षर जब किसी में मिलते हैं तो पूरे ही रूप से मिलते हैं यथा- लड्डा, वाक्य, आदि और जब कोई व्यंजन स्वर में मिलता है तो जैसे किर् को सब व्यंजन सिरपर लेते हैं वैसेही र भी इस रे को अपने ऊपर लेता है और पैरों में गिरता है जैसे कि क्रम, भ्रम, भ्रम, आदि-

लड़कियों को चाहिये कि प्रातःकाल उठके अपना मुख धोकर जो कुछ कि गुरु से पढ़ा हो उस को याद करें और जितना पढ़ चुकी हों उन का पाठ पुस्तक देख ध्यान पूर्वक करती रहे

जिससे पिछला भूलें नहीं, जो बालक अपने पाठ को भूल जाते हैं वे मूर्ख रह जाते हैं, और उन का परिश्रम किया हुआ वृथा ही जाता है और सब जगह उन का निरादर होता है, और जिन को पाठ स्मरण रहता है वे सब स्थानों में आदर और सत्कार पाती हैं, और माता पिता भी उन से अत्यन्त प्रसन्न हो कर अनेक प्रकार के लाड़ प्यार से नाना प्रकार के भोजन वस्त्र और अलंकार से सुशोभित करते हैं, और जब विवाह के योग्य होती हैं तब सुन्दर कुलीन रूपवान विद्यासम्पन्न वर उन के लिये खोज करते हैं, और बड़े उत्साह पूर्वक अपनी सामर्थ्य भर धन ख़र्च कर के विवाह करते हैं जिससे आजन्म सुख चैन से समय को व्यतीत करें, इस हेतु हे कन्या लो तुमभी येही बातें अंगी कार कर के अपने माता पिता भाई बन्धु आदि सब को प्रसन्न

करो, जिससे कि तुम्हारा कल्याण हो इस शि
क्षा से केवल हमारा यही प्रयोजन नहीं है
कि तुम केवल विद्याही पढ़ो संसार के काम
न सीखो किन्तु उचित है कि घर के काम काज
भी मन लगा कर सीखो जैसे कि रसोई का काम
और नाना प्रकार के व्यंजनों का बनाना और
सीवना ओढ़ना सूत कातना और जाली काढ़
ना कसीदा काढ़ना गोटा किनारी कपडों पर
लगाना बेल बूटा काढ़ना आदि इस के विशे-
ष अपने घरों के नेक चाल चलन रीति मर्य्या-
द शुभा शुभ बातों का विचार दान पुण्य सुजन
ता मधुरभाषण इष्ट मित्रों का आदर सत्कार
देव तीर्थ दर्शन स्नान ईश्वर का स्मरण और दुष्ट
जनों का परित्याग और सज्जनों का सत्संग आ-
दि अनेक कुलीनों की मर्य्याद सीख कर कुशल
होना योग्य है क्योंकि जब तुम्हारा विवाह

होगा और पराये घर की स्वामिनी बनोगी उस समय तुम्हारे गुणों को जान कर तुम्हारे सुसर सास देवरानी जिठानी ननद और सब इष्ट मित्र ओहारी तुम्हारी प्रशंसा करेंगे और तुम अपने घर में नाना प्रकार के पदार्थों को सुस्वादु बना कर अपने स्वामी को खिला कर अनेक प्रकार के आनन्द को प्राप्त होगी और वस्त्र आदि तुम अपने हाथसे सीवोगी और बेल बूटों से सुशो भित कर के कसीदा काढ़ोगी तो अपने हाथ के सुन्दर वस्त्र पहरोगी इससे इष्ट मित्रों में सुघड़ और बुद्धिमान कहा कर अपने वस्त्रों से सुशो भित रहोगी इन बातों के सिवाय अपने समय के मंगलीगीत आदिभी सीखो जैसे कि सोहर, छवी, मूड़न, कन्छेद, सगाई, लग्न, विवाह, गौन, और ओहारों के गीत कहानी और भजन आदि अनेक प्रकार के मंगल गानों को

याद करो जिससे कि तुम को सबलोग अपने आवश्यक कामों में सन्मान पूर्व्वक बुलावें और अपने घरमें किसी का आश्रय नकरना पड़े, अपने स्थान को पवित्र करना पात्रों का शुद्ध करना और किसी प्रकार की मलिनता न होनें देना इससे बड़े लाभ हैं क्योंकिजो ऐसी सफाई घर में रखती हैं वे कभी दरिद्री नहीं होंगी और न उन के घर में कोई पीड़ा आवेगी सदैव नीरोग रहैं इन विद्याओं आदि के पढ़ने से और सब प्रकार के संसारी कामों में कुशल होजाने से बड़ा भारी मुख्य फल तुम को यह होगा कि जब तुम्हारी संतान होगी तो तुम अपने लड़के बालों को आजन्महीं से नेक चाल चलन में डालोगी और उठना बैठना अदब क़ायदा सिखा कर विद्याही के खेलों को खिलवाओगी और जब वे बड़े होंगे तब उन को विद्याहीपढ़ा

होगी तो महा विद्वान चतुर होंगे और कभी बुरे मार्ग में भूलसे भी न पैर बढ़ावेंगे क्योंकि बाल्य अवस्था में जो शिक्षा होती है वह जन्म भर नहीं भूलती और बालक जो शिक्षा माता की पाते हैं और उस उत्तम शिक्षा को मान कर अपने माता पिता की आज्ञा को प्रति पालन करते हैं वे बड़े २ सुख भोग कर अन्त में उत्तम पदवी को पाते हैं और अपने सैंकड़ों कुलों को उद्धार करते हैं क्योंकि श्रीमद् भागवत में भी लिखा है कि जो पुत्र बिना कहे सुने अपने माता पिता की सेवा करते हैं वे उत्तम और जो कहने पर करें सो मध्यम और जो कहने पर भी चिड़ा चिड़ा कर आज्ञा प्रति पालन करें वह निषिद्ध समझना चाहिये और जो आज्ञा न माने वह मूत्र के तुल्य है अर्थात् महा पतित है—

दोहा

जाही पेड़े पूत है । वाही पेड़ै मूत
एम भजे सोपूत है नहीं मूत का मूत

जाली बनानें की रीति क्रम से प्रश्नोत्तर में लिखते हैं

प्रश्न

आगे लिखी हुई जालियों में फूल किस को समझें और डोरा किसको जानना चाहिये—

उत्तर

इन जालियों में काली लकीर को फूल समझो जैसा कि—

और उसकी सूध की जितनी हद्द खाली है उस को डोरा जानना चाहिये—

प्रश्न १

रेखा किसको कहते हैं

उत्तर

दोहा

रेखा रेखा सब कहत रेखा को कह रूप ॥
अर्ज़ जासु दीखत नहीं तूल हिसूक्ष्म सरूप
अर्थात् रेखा उस को कहते हैं जो लकीर लंबी है

प्रश्न

विन्दु किस को कहते हैं

उत्तर

बिन्दु उसको कहते हैं जिसके कि भाग न हो सकें-

प्रश्न

जालियां के प्रकार की हैं-

उत्तर

जालियां तो कई प्रकार की हैं परन्तु पहले अठ मास की जालियों का वर्णन करते हैं उन के नाम ये हैं, अठमास. लंबा अठमास. चौकड़ा अठमास. कमल का अठमास. दुहरा अठमास. औरेवी अठमास. आदि अठमास जालियों के नाम तो बहुतेरे हैं परन्तु पुस्तक के बढ़ जाने से थोड़े ही नाम लिखे और उन की उत्पत्ति भी उतनी ही लिखी है—

प्रश्न

उन में से पहले अठमास की जाली वनाने की उत्पत्ति क्या है-

उत्तर

दोहा

अठ पहलू जाली नकी उत्पति कहौं सुनाय
समझ लेय इस को जबै तब सब लेयँ बनाय
रेखा से रेखा मिले अर्ज़ तूल सम लेख॥
चतुर भाग सम मध्य में सोही जाली देख।

पहले अर्ज़ और तूल में भर पूर लड़ियां नानें जिस के तान नेसे ऐसी बरत होगी जैसी कि इस चित्र में लिखी है फिर इस के बाद उस के फूल तोड़ना इस हिसाब से

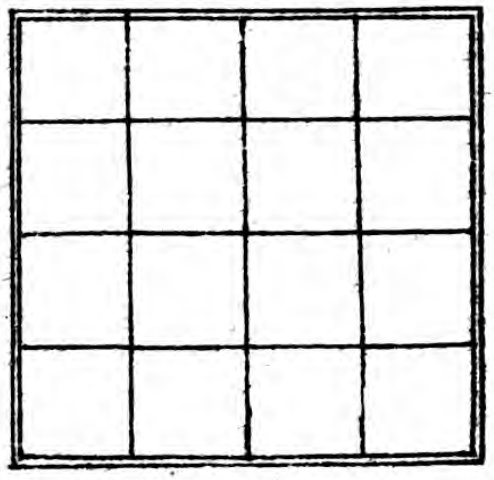

आरंभ करे कि एक खाने के तोड़े और एक खाने

के न तोड़े तोड़ती हु तो उस की होगी जैसी

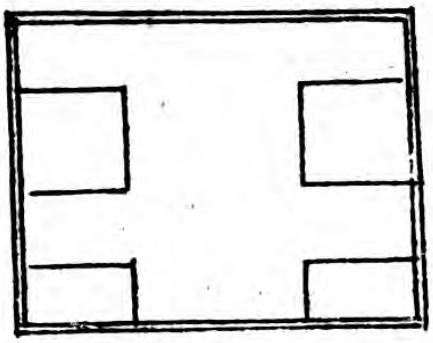

इसी क़दर ई चलीजाय सूरत ऐसी कि इस चित्र में है—

इस के पीछे फिर हर एक चौकड़े की आपस में फूल की लड़ी लेके कोने से कोने को मिलादे तो अठमास की जाली बनजाय गी जैसी कि इस चित्र में लिखी है—

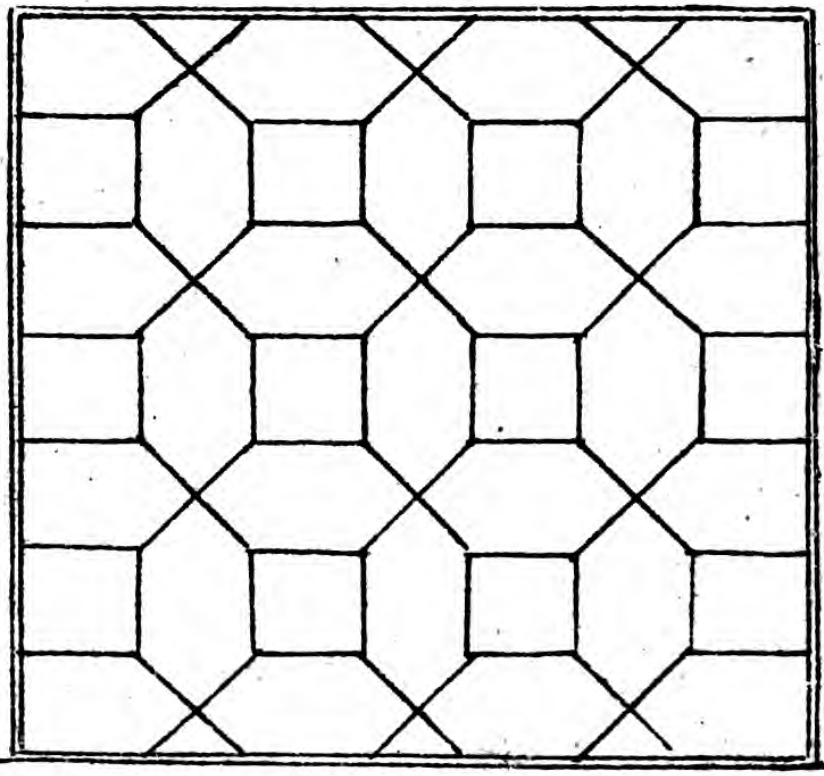

प्रश्न

लम्बे अठमास के बनाने की क्यारी लिखै।

उत्तर

पहले अर्ज़ और तूल में भर पूर लड़ी फूल की ताने जाय तो उस दद्दी की सूरत ऐसी हो जायगी जैसीकि इस चित्र में लिखी है—

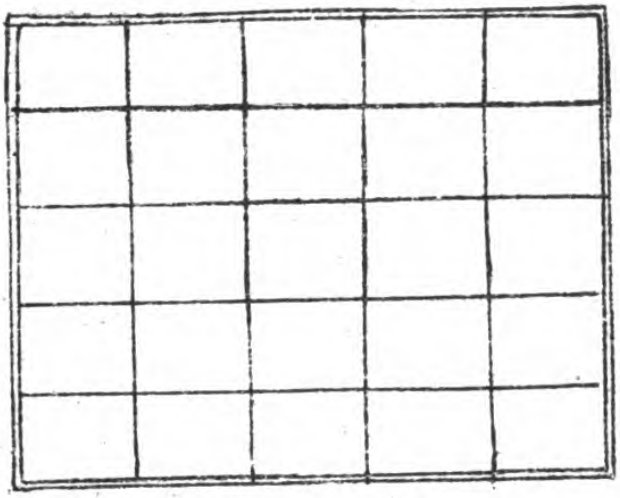

इस के पीछे जैसे कि पहले इकहरे अठमास की जाली में खाने बना आये हैं उसी तरह के लंबे दुहेरे खानें बनाता हुआ चला जाय और इनमें दुहेरे लंबे चौखूंटे खाने की बी च की लड़ी भर पूर रह ने दे तो उस की सूरत ऐसी होजायगी जैसी इस चित्र में लिखी है—

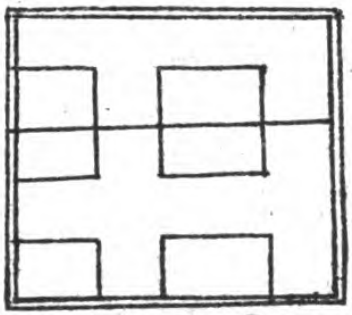

बाद इस के हरएक कोने से कोने को मिला दे जैसे कि आठ मास की जाली में मिलाआ ये हैं वैसे ही इस में भी मिला दे तो लंबा आठ मास बनजायगा जैसा कि इस चित्र में लिखा है

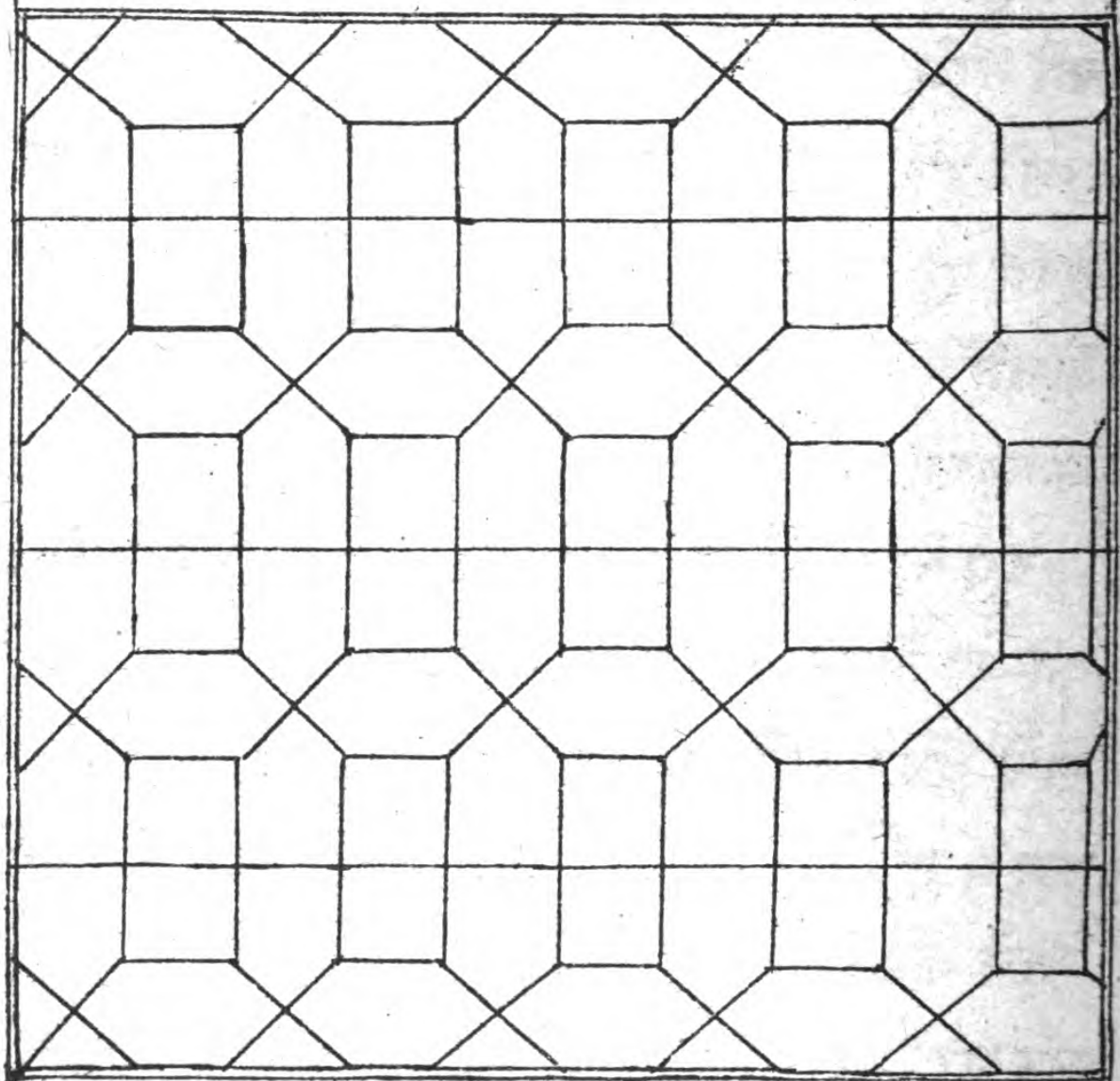

प्रश्न

चौरुखे अठमास के बनाने की क्या रीति है

उत्तर

पहले तूल में कोने से तीसरी कील पैसे कटवांलड़ी तान जावे अर्थात् ए क ख़ाना छो ड़े और दो ख़ाने केफूल देता हुआ चला जाय तो ऐसा स्व रूप होजाय गा जैसा कि इस चित्र में लिखा है—

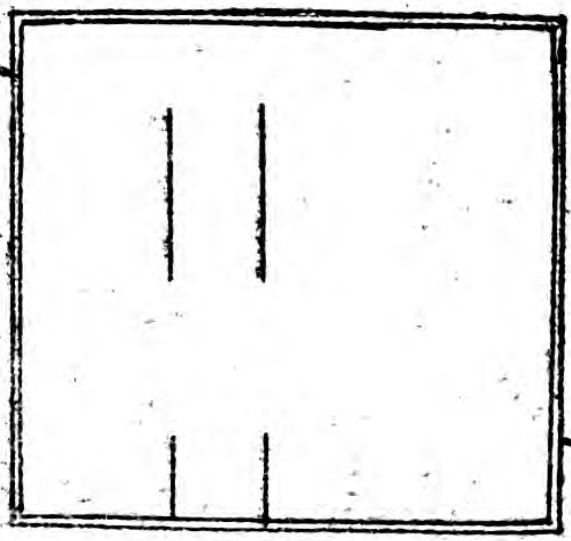

पीछे से अर्ज़ में कोने की दूसरी कील से दो ख़ाने में फूल दे और एक ख़ाने में न दे इ सी तरह से लड़ी को तान दो फिर अर्ज़ की ननी हुई लड़ी से एक कील छोड़ कर वैसेही तानता हुआ चला जाय तो दुहेरा चौकड़ा हर एक जगह बन जायगा जैसा कि इस चित्र में

लिखा है—

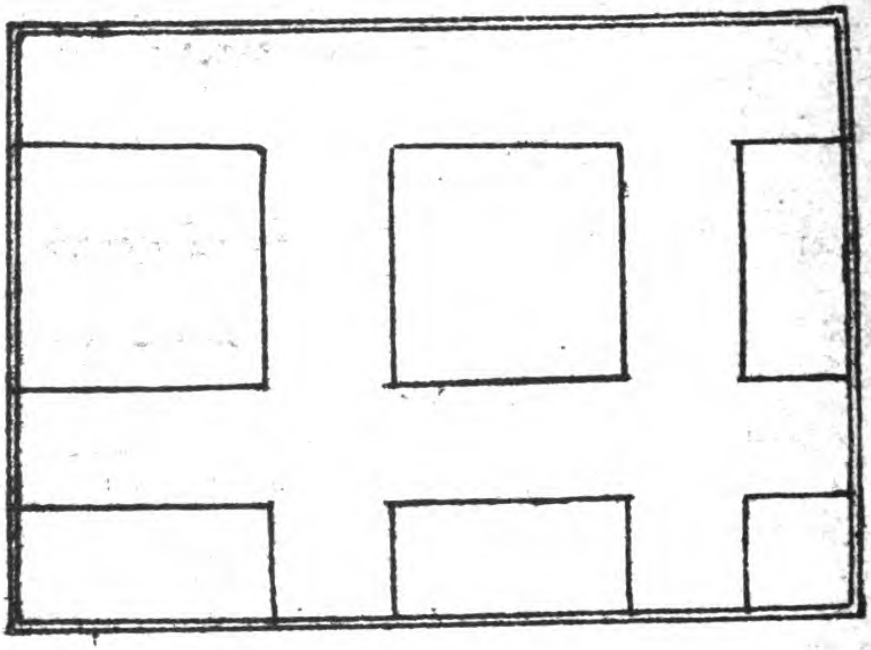

इन चौरुखे ख़ाने बन जाने के पीछे फिर चौरुखे खाने के कोने से कोना लड़ी ले के मिदे ठोर कः स

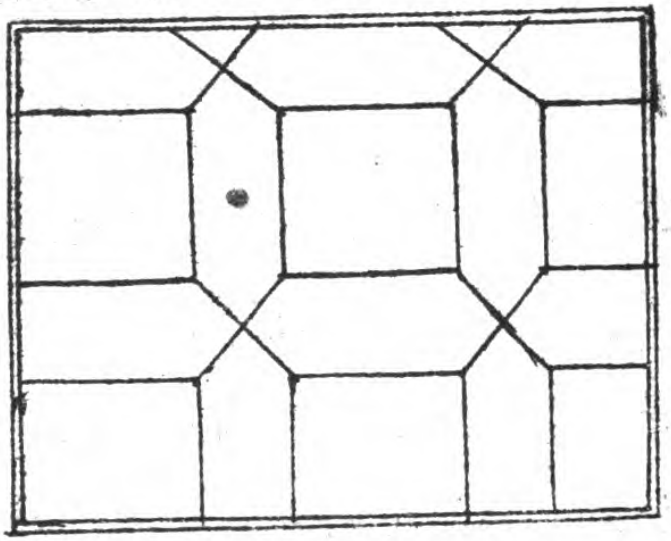

ला तो २ मा प ड़ना हुआ चला जायगा जैसा कि इस चित्रमें लिखा है-

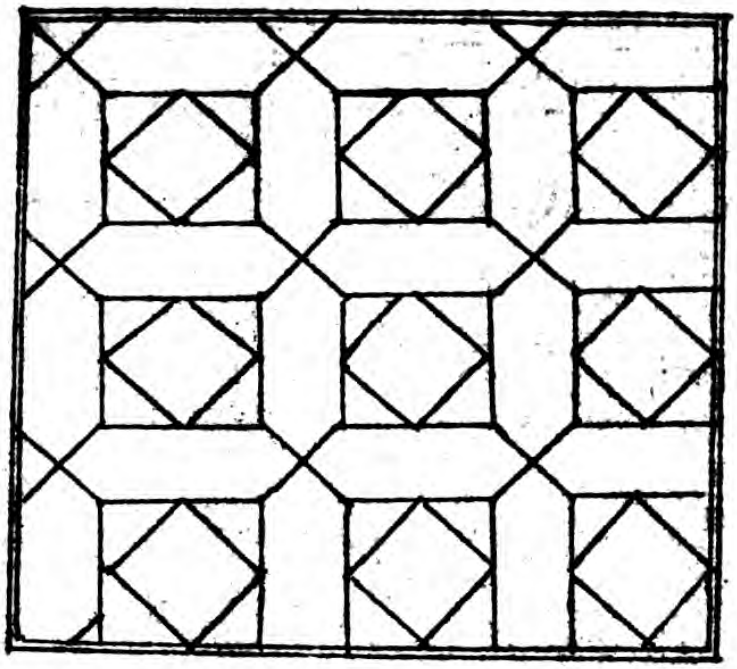

बाँधने से ऐसी सूरत बन जायगी जैसी कि ऊपर लिखी है—

इस प्रकार बन जाने के पीछे फिर औरबी चौरुखे ख़ाने के ऊपर की छः मास के तूल में लड़ी एक ख़ाने की दे और औरबी चौरुखे ख़ाने को ख़ाली छोड़ती जावें इसी प्रकार अर्ज़ में भी तानती जावें तो पूरी जाली चौरुखे आठ मास की बन जायगी जैसा कि इस

चित्र में लिखा है-

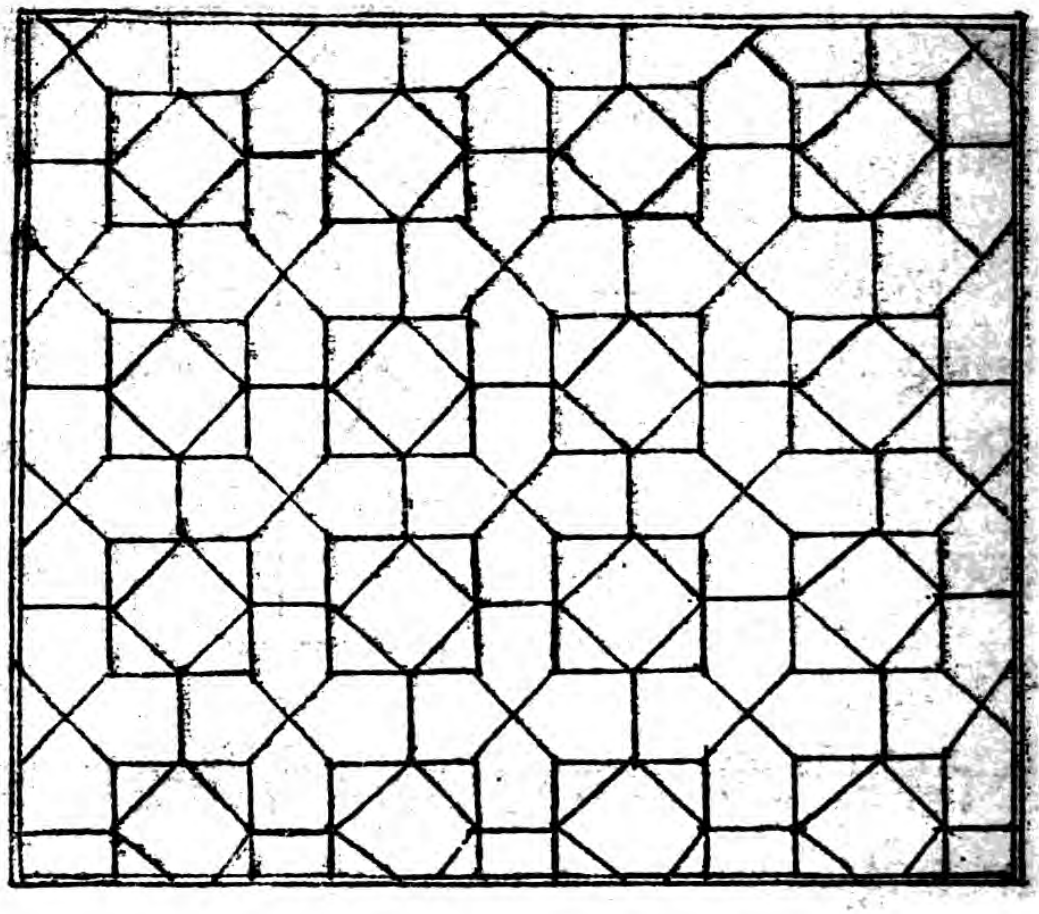

प्रश्न

॥ कमल के आठ मास बनाने की क्या रीति है

उत्तर

दोहा

इंची भर खाली करे इंची भर भर पूर ॥
ऐसे अर्ज़ मिलाय के देय तूल में पूर ॥

इंची कोडोरा भरो। इंची ख़ालीजांहिं
कोने से संबंध कर सोजाली होजाहिं २
अर्ज़ी तूल संबंधकर बने चौकड़ा आय
कोने से कोना मिले सोजाली होजाय २

अर्थात

एक कीलकी ख़ाली और एक कीलकी भरी लड़ी अर्ज़ में ताने ऐसेही बनी हुई अर्ज़ की लड़ीसे दो कोनों को अर्थात् दो कील छोड़ कर वैसेही ताने परन्तु फिर दूसरी कीलसे फिरताना हुआ वैसे ही अर्ज़ और तूल में चलाजायतो

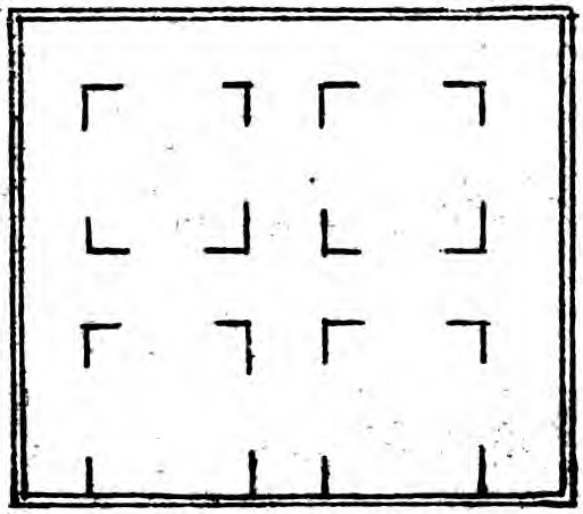

हर एक
ठौर पर
कीलि यांब
नजां वेंगी
जैसी किद

स चित्र में लिखी हैं—

इस के अनन्तर कोनियों के बीच में चौकड़ा बांध दे जैसा कि अठमास का ख़ाना पहले बांध आये हैं फिर कोनियों के कोने से और चौकड़े के कोने से संबंध कर दे तो कमल के अठ मास कीजा ली ब नजा यगी जैसे कि इ सूचि त्र में लिखी है-

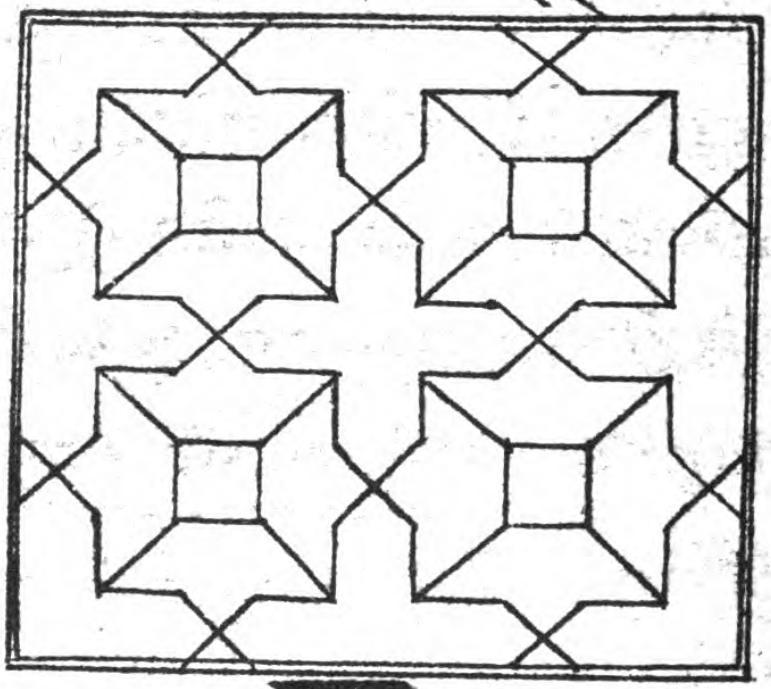

प्रश्न

दुहैरे अठ मास के बनानें की क्या रीति है

उत्तर

पहले अर्ज़ और तूल में भर पूर लडियां फूल की ताने जिस की सूरत ऐसी हो जायगी जैसी कि इस चित्र में है-

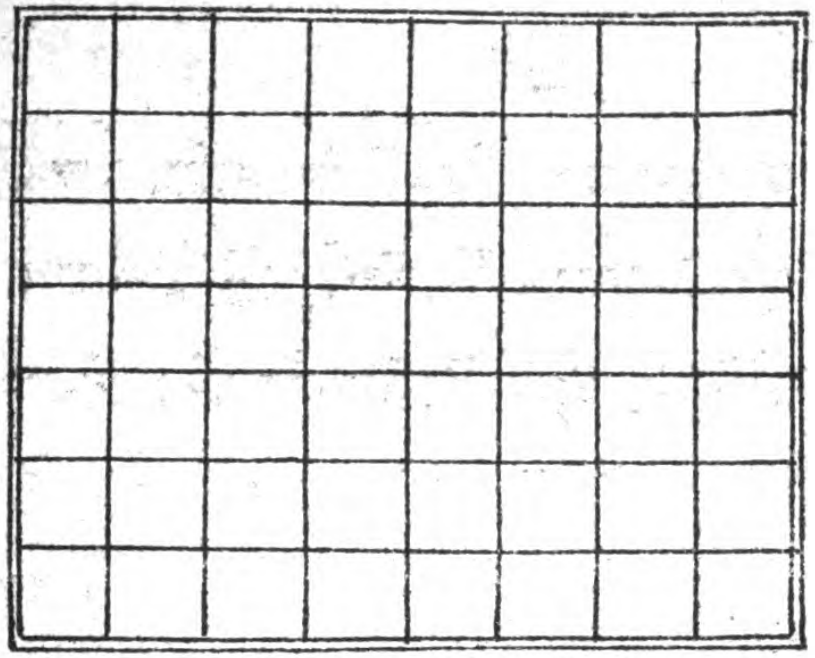

इस पीछे चौखूंटे ख़ाने बनाजावें परन्तु चौखूंटे ख़ाने के नीचे की लड़ी अर्ज़ और तूल की भरपूर रहने दे और दो चौकड़ों के बीच की लड़ी अर्ज़ और तूल में चौकड़ की वराबर रहने दे जिस की सूरत ऐसी होगी जैसी कि आगे है—

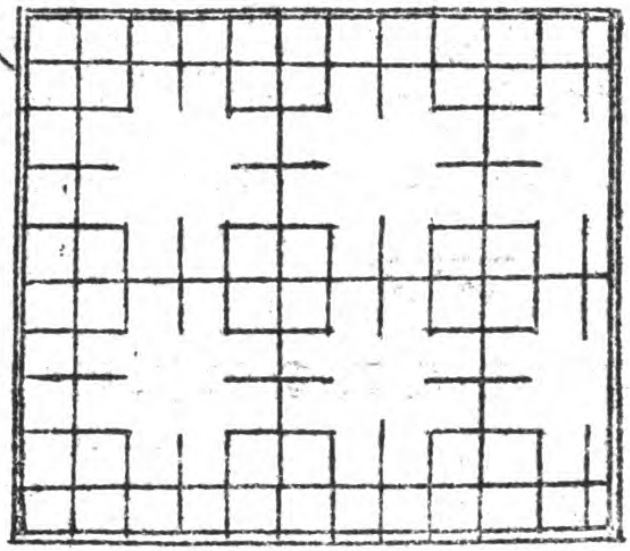

इस के सिवाय उन लड़ियों को चारों तरफ से एक दूसरे से मिला दो तो औरेबी चौकड़ा बन जायगा औरेबी चौकड़े के कोने से कोना मिला दे तो दुहेरा अठ मास बन जाय जैसा कि इ सचित्र में लिखा है—

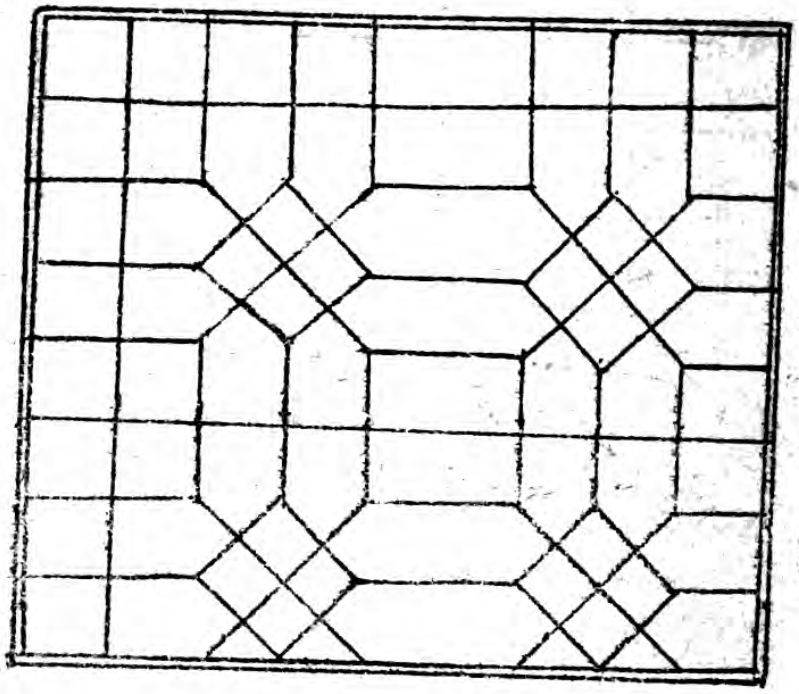

प्रश्न

औरेबी चौखूंटे अठ मास के बनाने की क्या रीति है—

उत्तर

पहले लड़ी अर्ज़ और तूल में इस हिसाब से ताने कि कोने की कील से दो ख़ाने का फूल

ताने और दो खाने को न ताने पहले तूल में तन जाय ऐसेही कोने की दूसरी कील से अर्ज़ में न य ऐ स न जा

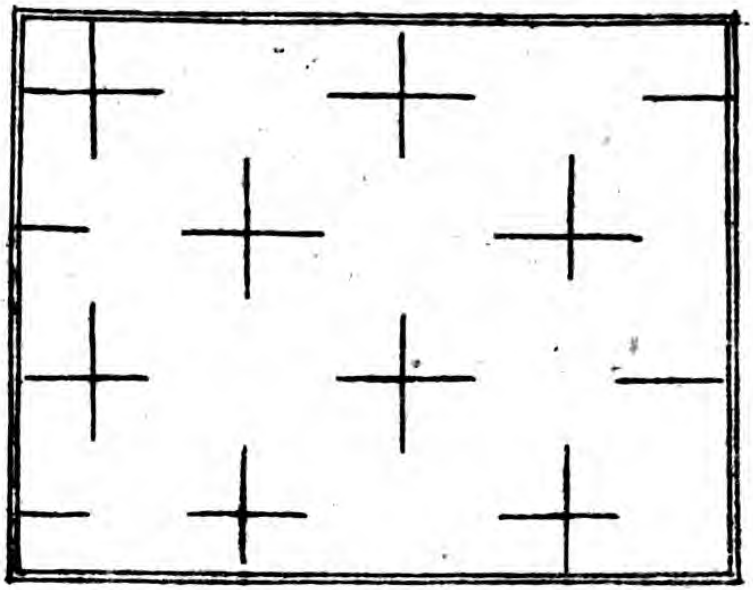

ती र हो वे गी जैसी कि इस चित्र में लिखी है-

इसके एक लड़ी से कोना देतो हूब बी अठ

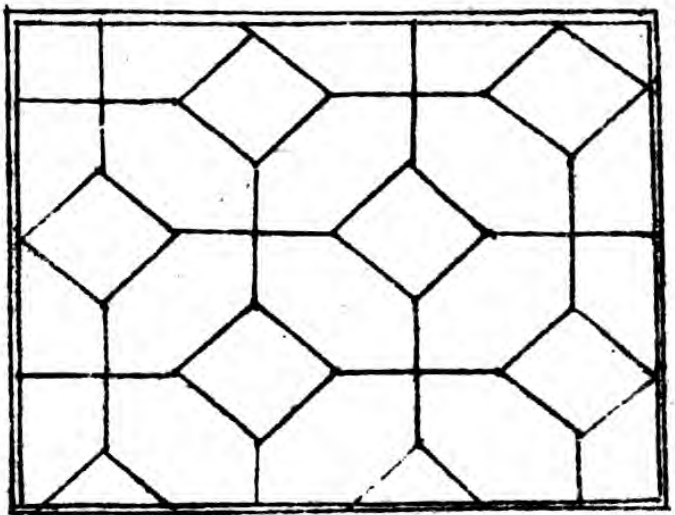

पीछे हर के कोने मिलाय हू और मास की जाली बनजायगी जैसा कि इस चित्र में लिखा है-

प्रश्न

कटहरे बनानेकी क्या रीति है

उत्तर

कटहरे अर्थात् हाशिये बनाने की यह रीति है परन्तु इस बात का स्मरण रक्खो कि अब जितनी जालियों के चित्र आगे लिखे हैं वे सब जालियां कटहरे अर्थात् हाशियों में बन सकी हैं जैसे थोड़ेसे कटहरे में वेही जालियां बनाते हैं पहले अठमास के कटहरे बनाने की क्या रीति है ॥ अर्ज़ और तूल में भर पूरी फूल की ताने जिस के तानने से ऐसा स्वरूप हो जायगा जैसा इस चित्र में लिखा है-

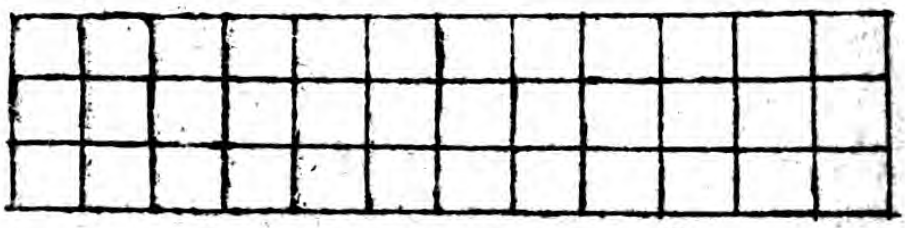

इस के अनन्तर फूल के तोड़ने का आरम्भ इस हिसाब से करो जैसा कि पहले अठमास की जाली में ख़ाने तोड़ आये हैं वैसे ही तोड़ो तो हर एक ठौर पर चौखूंटा ख़ाना बनजायगा जैसा कि यह है-

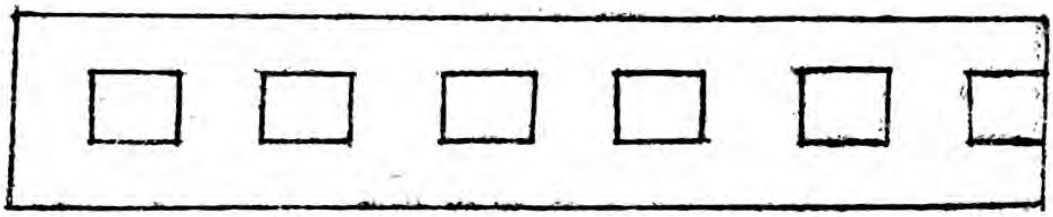

इस के पीछे फिर हर चौखूंटे ख़ाने के कोने से कोने को मिलादे तो इस कठहरे में अठमास की जाली बनजायगी जैसी कि इस चित्र में लिखी है-

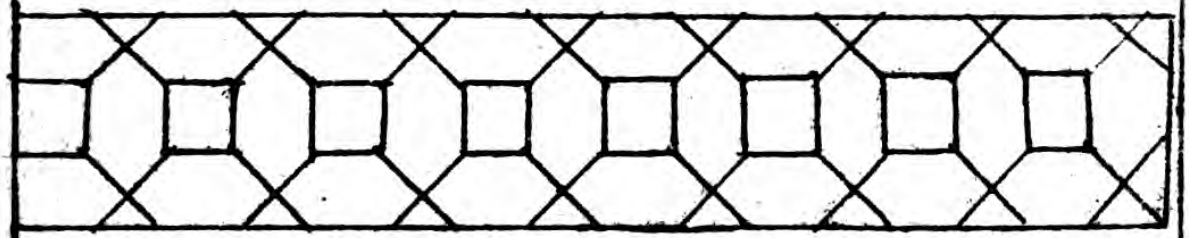

इसी तरह से कही हुई रीति से जिस का चित

चाहै जैसे प्रकार का कटहरा बनाले शेष दूसरे भाग में लिखेंगे—

व्यंजनों के बनाने की रीति प्रश्नोत्तर में लिखते हैं

प्रश्न

रसोई कितने प्रकार की होती है—

उत्तर

रसोई तीन प्रकार की होती है एकतो निखरी दूसरी सखरी तीसरी फल हारी—

प्रश्न

निखरी किसे कहते है—

उत्तर

निखरी अर्थात् पक्का भोजन उसे कहते हैं जो घीमें तलकर कियाजाय जैसा लड्डू कचौरी पूरी खुरमा जलेबी आदि—

प्रश्न

सखरा भोजन किसे कहते हैं-

उत्तर

सखरा कच्चे भोजन को कहते हैं जोकि रंधकर अर्थात् चुराकर कियाजाय अर्थात् घीमें न तलाजाय जैसा दाल या पेथी चावल कढ़ी खिचड़ी आदि॥ और किसी२ देश चाल और कुल व्योहार सेभी भोजन को कच्चा मानते हैं जैसे कोई तो हलदी डालने से भोजन को कच्चा मानते हैं और कोई नोन डालनेसे सखरा मानते हैं-

प्रश्न

फलाहारीभोजन किसे कहते हैं-

उत्तर

फलाहारी भोजन उस को कहते हैं जो पदार्थ कि दूधसे बनता है जैसा पेड़ा बरफी बालाई रबड़ी दूध मिसरी के लड्डू आदि और जो पदार्थ

सिंघाड़े या कूट के आटे से बनते हैं वेभी फला हारी भोजनों में गिनेजाते हैं-

रसोई बनाने के तीन अध्याय हैं पहले अ-ध्याय में कच्ची रसोई दूसरे में पक्की और तीस-रे में मिठाई पकवान आदि बनाने की रीति चित्र सहित लिखी हैं—

पहला अध्याय कच्ची रसोई के वर्णन में

प्रश्न

दाल कितने प्रकार की होती है—

उत्तर

दाल छः प्रकार की होती है—

एक उड़द की दूसरी अढ़हर की तीसरी मूंग की चौथी मोथी की पांचवीं चने की छठी मसू-र की—

प्रश्न

उड़द की दाल कैसे बनती है—

उत्तर

उड़द की दाल बनाने की यह रीति है कि रसोई से दो पहर पहले भिगोदे जब भीग जाय तब मसल कर एक गहरे पात्र में पानी भर के उस मसली हुई दाल में से थोड़ी दाल एक चलनी में ले उस पानी के बर्त्तन में चलनी को डबोदे तो उस के छिल के उतर कर ऊपर को आजाते हैं और दाल चलनी में नीचे रहजाती है उन छिलकों को हाथ से निकाल डाले इसीतर ह सब दाल को धोकर एक बासन में रख ले फिर एक बटुए में पानी भर चूल्हे पर रक्ख व हुत गरम करे उस पानी को अदहन कहते हैं



निकाल ले फिर उस बटले में घी प्रमाण से डाल

लाल मिरच हलदी अनुमान से डाले जब गरम
हो जाय तब दाल को बदले में डाल करकुलसे
हलावे और सेरदाल में एक पक्के टके भरलोंन
डाल ढकदे फिर थोड़ी देर के पीछे अदहन
जो रक्खा है उसे डाले जो बहुत घी डालना हो
तो थोड़ा पानी डाले और साधारण करनी हो
तो दाल से उंगल भर ऊपर अदहन को रक्खे
जब दाल गल जाय तब उसे उतार बदले को
अंगारों पर धरदे और जो घांबल करने हों तो
दूसरा बदला चूल्हे पर चढ़ादे नहीं तो तवा
धरदे फिर दाल में सोंठ पैसे भर धनियां १पैसे
भर दालचीनी छदाम भर बड़ी इलायची २काली
मिरच छदाम भर इन सबों को कूट बुकनी अर्थात्
चूरसा करके डालदे यह एक सेर दाल का मसाला
है कदा चित् घी बहुत देना हो तो मलाई पाव
भर दूधकी अथवा मीठे दही की डालकर पाव

भर घीभी डाले जीरा और राई का बघार देकर ढकदे और साधारण करनी हो तो केवल मलाई न डाले और सबरीति करे और जो ग़रीबा मऊ करे तो सोंठ धनियां लालमिरच नोनडाल कर करले—

प्रश्न

मूंगकी दाल किसरीति से बनती है—

उत्तर

मूंग की धोवा दाल उड़द की दाल के समान बनाई जाती है परन्तु इतना अन्तर है कि सोंठ और धनियां कमती डाले और इमड़ी भर लोंग या चूरा करके छोंक दे और साधारण अर्थात् छिलकों की करनी हो तो केवल नोंन मिरच डाल कर करले और मेथी वा चने का साग या कोई और साग भी डाल कर करते हैं

प्रश्न

अढ़हरकी दाल करने की क्या रीति है-

उत्तर

अढ़हर की दाल करने की रीति यह है कि पहले बदले में अदहन रक्खदे और उसमें दाल को दो तीन पानी से धो कर डालदे और हलदी भी छोड़ दे और जब दाल आधी गलजाय



तब नोन डाले और खिलवां करनी होतो उस का पानी नितार ले और उसे अंगारों पर धरदे जब खूब गलजाय तबजो मसाला उड़दकीदाल का है वही सब इसमें भी डाले जीरा का छोंकदे

कर बटले को संड़ासी से पकड़ कर हिलादे कलछी न डाले और जो छिलवां न करनी हो तो रस का पानी न निकाले और जब खूब गल जाय तब मसाला डाले और लाल मिरच २ ज़ीरा एई इन का छोंक लगाकर सोंठ धनियां अमचूर डाले-



रोटी सेकनेवाली

प्रश्न

रोटी कित ने प्रकार की होती है-

उत्तर

रोटी दो प्रकार की होती है एक रोटी जोकि

प्रसिद्ध है दूसरी बिपड़ी अर्थात् दुहरी—

प्रश्न

रोटी कैसे बनाई जाती है रोटी की क्रिया के वर्णन करने की कुछ आवश्यकता नहीं थी पर लड़कियों के सिखाने के लिये पूछना पड़ा—

उत्तर

रोटी की क्रिया सब जानते हैं परन्तु लड़कियों के अभ्यास के लिये रोटी की सब क्रिया को लिखते हैं करने से दो पहर पहले आटा गुंधवावे अथवा दाल करने का बटला चूल्हे पर चढ़वा कर वा आप चढ़ा कर अवश्य ही गुंधवावे जब तक दाल चावल तरकारी हो तब तक आटा भीगता रहे आटे को इस प्रकार गूंधते हैं कि पहले थोड़ा पानी डालकर एक लोआसा बाँधले फिर दोनों हाथ की मुट्ठी

बाँधकर आटे को साने फिर ख़ूब गुंधजाय तब मुट्ठी से आटे को थालीभर में फैलादे और ऊपर से पानी छोड़दे और जब दाल रंधगई अर्थात् चुरगई हो तो उस को उतार ले और जो कम गली हो तो अंगारों पर धरदे और तवे को चूल्हे पर रक्त आंच करदे फिर आटे में से लोई तोड़ सूखा आटा लगा कर रकबले उस लगाने के आटे को पलोथन कहते हैं तदनन्तर लोई की टिकिया कर पलोथन लगा कर पीढ़े या कुर से पर बेलन से बेल तवे पर डाले अथवा हाथ से पोकर तवे पर डाले और देखे कि रोटी में जब लाल चित्तीसी पड़ गई हो तब रोटी को उतार धर ई अर्थात् घणकी आंच पर सेके जब फूल उठे और लाल होजाय तब उस की राख झाड़ किसी पात्र में रक्त कलछी से रोटी पर घी लगाता जाय या बिन चुपड़ी रखता जाय

उस घी लगाने को चुपड़ना कहते हैं—

प्रश्न

विपड़ी अर्थात् दुहेरी रोटी जिस को इस देश में जुड़िया रोटी कहते हैं वह किस रीति सेबन ती है—

उत्तर

विपड़ी रोटी बनाने की यहरीति है कि पहले कही हुई रीति के अनुसार आटा सानले फिर बहुत ही छोटी लोई तोड़े और दो एकलोई को आटे अर्थात् परोथन में लपेट कर एक दूसरी लोई को उंगली से चपटी कर उस में घी लगावे फिर उस परभी पलोथन लगादे तदनन्तर दोनों लोइयों को ऊपर तले रख टिकिया सी कर पलोथन लगा कर पीढ़े या हुरसे पर बेलन से ख़ूब बड़ीबेल कर तवे पर डाले और तवे पर ही सेंक ले जब रोटी में लाल दाग़ से

थोड़े २ हों तब उस की दोनों हाथ के दाबने से रोटी होजाती हैं उन को जुदी २ करपात्रमें धर कलछी से घी डाल चुपड़ले ऐसी रोटी खीर हलुवे अथवा कढ़ी के संग खादेती है-

प्रश्न

भोजनों में चांवल के प्रकार के होते हैं-

उत्तर

चांवल चारप्रकार के रसोई में होते हैं और उन के नाम यह हैं एक चांवल जिसे सबजाने हैं- दूसरे मीठे चांवल- तीसरे केसरियाचांवल- चौथे नमकीन चांवल-

प्रश्न

चांवल किस भांति से बनते हैं-

उत्तर

यों तो चावल करना सबही जानते हैं परन्तु लड़कियों के सीखने लिये इस की रीति लिखते

हैं कि पहले चांवलों का अदहन रक्खे और चांवलों को २ वा ४ पानी से धोवे जिससे उस का मैल निकल कल कर साफ हो जाय फिर जब अदहन ख़ूब खौल जाय तब चांवलों को बटले में डाल कर कलछी से हला के ढक दे जब उस का उफान ऊपर को आवे तब ढका हुआ पात्र उठा कर फिर कलछी से हला दे और आंच ख़ूब दे फिर एक चांवल को दाब कर देखे कि गल गये कुछ एक कड़े रहें तब उतार कर पात्र के मुंह से कपड़ा बांध औंधा करदे जब सब पानी निकल जाय उस पानी को मांड़ कहते हैं फिर उस में थोड़ा घी का डोरा देकर चांवलों के ऊपर तेजपत्र रख ढक कर अंगारों पर धरदे कभी २ उस पात्र को फेरदे जिससे चूल्हे की आंच से चांवल लग न जाय ग्रंथ बढ़ जाने के कारण एकही प्रकार के चांवल बनाने लिखे शेष

मीठे आदि चांवल और सोसावन- पूरन पूरी खीर- खिचड़ी- भुनीदुर्दखिचड़ी- मटर चड़वों की खिचड़ी इत्यादि कच्ची रसोंई के व्यंजन- और पक्की रसोंई में नागौरीपूरी- लचई- बेसनी- मीठी- सादी- सादीकचौरी- खस्ताकचौरी मालपुए- गुलगुले- मोहनभोग- गुड़कामोहनभोग- चिलड़े- मूंगकी पिट्ठीके चिलड़े- बैंगन बड़े- साग बड़े- कलमीबड़े- और सब प्रकार मिठाई लड्डू- जलेबी- इमरती घुरमें बालूसाई आदि- और फलारीभोजन यथा पेड़ा बरफी- आदि जब दूसरा भाग श्रीयुत डैरेक्टर साहब की आज्ञानुसार बनेगा उस में सब ब्योरे समेत लिखेंगे-

सार और सोहर जो जन्म के समय स्त्रियां गाती हैं लिखते हैं

सार

सार खेलन्ते एम चन्द्र कहा सार खेलिये मेरे लाल हंसत खेलत घर आइये कहो धन वेदन मेरे लाल हमतुम दोरके सनेहिया कहो समुझाइ के मेरे लाल मुहितोहि अन्तर नाही कपट जिय नाही मेरे लाल कहो समुझाइये मेरे लाल वामा कूल मोर फरके दाहिन मेरा साले सब धरहा ले मरदुं पंजर वाके पीर सुघर दई चाहिये मोरे ला ल दई को नाम नहिं जानों गाँव नहिं जानों सुघर दई कहाँ बसे मोरे लाल हंस के घुरवा पलानों विहसि असवार भये मोरे लाल अगले के घुरवा एम चन्द्र पिछले लछमन दई भाई लेन चले मेरे लाल पूछिलेउ माय बहनियां लगी पित

अनियां दाई भाई कहां वसे मोरेलाल ऊंचो सो
नगर अयोध्या हरे वांस छायो न्योत ठढ़ायो अंग
न चंदन वड़ो रूख चंपे की डार गुलाव सुहाव
सुहा वनों मोरेलाल किन मेरो खरका उघारो
कूकुर मोरे भूंखें पहरुआ जागिये मोरेलाल काके हो
तुम नाती कौन के पोत्ते कौन रजन के पूत इतीरात
आइये मोरेलाल आजुल के हम नाती पर आजुल
के पंती राजा दशरथ के पूत एतीरात आइये मोरे
लाल कि तेरी मैया पिरवाय कि वहिन पिरवाय कि
तेरी भावजी मेरेलाल न मेरी मैया पिरवाय न
वहिन पिरवाय न मेरी भावज पिरवाय हम घर
अलख वौहरिया वहुत सुकुमार एतीरात आइये
मोरे लाल दाई तो बैठी पलंग चढ़ सिरहा सेंधुर दे
नैन कजरा लाय मुखहितं वोल लाय गरव गहल
री दाई तो मुख हुन वोलिये मोरे लाल तेरी धन हा
थ की सांकर मुख की फूअर देइन जानिये मोरे

लाल मेरी धना हाथ की दलेल मुख की मिठबोल
हमते रो राखें मान चलौ उलायती मोरे लाल
वदन वदौ रामचन्द्र कहा मोहि दीहो कहा दै
समधिपो मोरे लाल जो मोरे हुइ हैं पूत तो अग
र गढ़ै इयों पाट पुहैयों जो मेरे लछिमन धिरि
या अवध रंग चूंदरी कुसुम रंग चूदरी पहिरै
हौं मोरे लाल सामन भादौं की अंधेरी है रात
अंधेरे मेरे कौन चलै गो मोरे लाल कुप्पन
तेल भरै हौं मसालैं जरैं हों उजेरे लेचलि हौं
मोरे लाल अगले के घुरवा राम चन्द्र पिछले
लछमन मझकी पल किया दाई चमर ढुरत
आवें हुकुम करत आवें एक पाव धरो देहरी
पर दूसरो पलंग पर सुगुन भले भये मोरे लाल
आओ जच्चा परौ लेटौ सूतों तेरी पींडरी मोरे
लाल जच्चाने जायौ पूत भई निहचन्त पियौ
है हरीरा हुओ मन धीरा खाया गुड़ सोंठ भई

सुख चैन चावे पान खाये दंत लला ले गोद ओ
ढ़े शिरसाल आनंद हो के सोय रही मोरे लाल
दाई लगाई वक वाद उठी सिर वाह दाई सिर
हर्द करे मोरे लाल चुप करो जच्चा चुप करो ज
च्चा वैरिनन सुने दुस मनन सुने आजसोने की
सत रूपे को दिन तुम्हारे घर वंस भये मोरे लाल
पूत दियो करतार वड़ेन के भाग दई माई क्या
कियो मोरे लाल परदे के वाहर हो ससुर मोरे
सुख सुनें मोरे लाल बुलाओ राजा रामचन्द्र
जिन हमसे वदन वदी मोरे लाल गरे को गुली
वंद वांह को वाजू वंद आरो को अगिलिया
पाछे को पछिलिया कर को कंगन दशे मुदरि
या अन वट विछिया गरे गज मोतिन हार ना
कन को वेसर चौकी जड़ाव की मोरे लाल सिर
चांवर की पोट रूपैया वहुरे क मधु की गगरि
या वाके सीस पियाला वाके हाथ पियत छक

न घरजाय मेरेलाल मुरिमुरिदेत असीस बढ़ो
जगदीश लला के अजुल लला के बबुल असीस
त घर चली मोरे लाल कोटन ऊपर कोटरामचन्द्र
और चुने मोरे लाल पूतन ऊपर पूत जचारानी
और जने मेरेलाल मानोंकि चांद सुरज उगे
सात शबद बजे धरती के रछपाल असीस त
घर चली मोरे लाल ॥ सोहर—

गोकुल बजत बधैया नंदघर आनद
उपजेहैं दीनदयाल दोनों कुल तारन उपजेहैं
बांस बसावन आजा जुड़वावन झगरे जसोदा
की दाई नार नहि छीना लेहौं अजुध्याकाराज
तो गोकुल जगीर लेहो दाई हो मोरी दाई
रजनजी दाई कुंवरजी की दाई देहौं अजुध्याका
राज गोकुल जगीर देहौं कपिलन दूध दुहैयोंलल
अन बंदियों पीतंबर लपटैहौं सिंहासन पौढ़ैहौं
घूंघर वारीलटूरियां बहुत छव लागें मानहुं

केवलका फूल भवर मन डांसे होरिल नैनन
काजर बहुत छबि लागे दीन्हों है फूकु सुहागिल
अंगुरी नहिं हाथे पायन सोने की घुघुरियां रुन
रुन बाजें कमर कंधनी जड़ाऊ तो कठला विरा
जे हाथन सोने के खगोरा पहुंची विराजे गरेमें
हंसली जड़ाऊ कंठी विराजे होरिल अंग अंगु
लियां बहुत नीकी लागे टोपी है लाल जड़ाऊ
तो मुकुट विराजे मोर मुकुट पीतंबर मुरली
अधरसो है प्रेमरास तो वलिजांउं तो संतत मन
बसे जो यह सोहर गावे गाय सुनावे कटहिं जन्म
के पाप सुनैया फल पावें १"

मचियां बैठी कौशिल्या रानी सुनौं राजा दशरथ
हमें संतत की साध संतत कैसे पावें बोल भई
हो कौशिल्या रानी किन वोरया जोन विधाता
देव संतत कहां पहिहो हंकरो नगर के मलिया
हंकरि बुलाओ माली वनसे सजीवन मूल

खोद ले आओ लाओ सोनें की सिलौटी रुपे
लागो लोढ़ा पिसु २ भरो कटोरा कौशिल्या रानी
औषद एक घूंट पियो कौशिल्या रानी दूसरो
सुमित्रा सिलधोय पियो केकई तो तीनों गरभ
से कौशिल भये राजाराम सुमित्रा के लक्ष्मन
के कई भरथ शत्रुहन तीनों घर सोहर अंथई
बैठे राजा दशरथ गोंएं संकल्पं मंदिये बैठी
कौशिल्या रानी आभरन लुटावैं द्रव्य लुटावैं
पटना लुटावैं जबउठि बोली केकई वैरिन
केकई दुशमन केकई समऊ के पटना लुटा
श्रीराम बनजैहैं तेरे मुख जारों केकई वचन
कैसे बोली छुटिनो बनियां को नाम मैं अधिक
लुटे हौं बन को जैहैं बनिया सें लौट घर ऐहैं
चुटिलो बनियां को नाम मैं अधिक लुटे हौं
हंकरो नगर के पंडित हंकरि बुलाओ वेगि च
लि आओ पांडे कौन घरी भरा रामलो बांच सुनाओ

आछी घरी भये राम रोहिणी नक्षत्र भये बारह
वरस के राम तो वन को सिधरि हैं बारह वरस
के राम आंगन मेरे ठाढ़े माता देहु आज्ञा हम
जांय तो वन करि आवें लाओ न पाट पीतम्ब
र नयन मेरे बांधो जिह्वा पे धरो अंगार जौन
मुख विदा करों एक वन नांघि दूसर वन ठाढि
भये भरय तौर जाओ घर को कौशिल्यामाता
विलखें बारह वर्ष पीछें आये वन करि आये
अजुरी अनुधा बसाई राम घर आये जो यह
मंगल गावे गाय सुनावे कटहिं जन्म के पाप
सुनेया संतति पावे ॥

पुत्र के जन्म की सोहर

राम के आंगन कुइयां सीतल रानी
पानी भरें उन के लपक २ बिरिया भलसोहे
उपजे हैं दीउ दयाल दोनो कुल तारे महिप
लूटिन सेंयां का वहिनियां यहि ललुआ के

मूड़ने और कन छिदनेआपु बनामैं ननद बुलैहौं इतना कहा पठिहौ भोर होत पहु फाटत होरिल जनम लीन्हा बाजे लागे अनंद बधैया गावैं सखि सोहर आंगन बजै बधैया भीतर मोरे सोहर सात सबद सहनइया ससुर द्वारे बाजे जो यह मंगल गावेगाय सुना वै तरि वैकुंठ जाय सुनैया फल पावे ॥

छटी की सोहर

मेरा औसर बीता जाय हरदी चाहिये कहँ ना हरदी उपजी को मोरे आननजाय पर्व्व त हरदी ऊपजी नन्दुलि आनन जाय हरदी ले नन्दी ठाढ़ी भई देव भौजि मेरा नेग नेग आग नंदी कछू हन पड़हौ लेहो बेलका सींग सींग तो रेओ भौजी भैया बहिन को हमरो नेग धरि देव को यह ऐपन बांटि यह को अवछठि या धराइये जिठनियां ऐपन बांटियेनन्दुलि

छठिया धराइये भैयन खोली संदुखिया मेरी भौजी ने खोला पिटार पहिर ओढ़ नंदी ठाढ़ी भई भरि भरि देत असीस—

असीस

ए जच्चा मेरा नेगा दीजो जीवे यहलाल तेरा बासन को गोंएं दीन्हों भासन का घोड़ा हमारा नेगा दीजै जीवहि यहलाल तेरा नाई को जोड़ा दीन्हों और बारी को जोड़ा दीन्हों हम को तुम काहू दियो अंमा को तुम कंगन दीन्हों जिठानी को तुम माला दीन्हों हमको तुम काहू दियो जीवहि यहलाल तेरा बूढ़ा बैठे सैयां रुगड़ें हमारा नेगा दीज्यो परदा भीतर जच्चा बोले सुन राजा मेरी बात हमारा नाम चलिहै तुम्हारा नाम चलिहै तुम का यहलालेव ॥

लड़के की छठी

लड़के के जनम से छठे रोज़ छठी होती है उस दिन भीति में आदमी का पुतरा बना के नेगिन को नेग दिया जाता है सब से बड़ा हक नजर का होता है, उस दिन गाना बजाना होता है, उस दिन का सोहर और तरह का होता है,॥

छठी का सोहर

चैतहि के तिथि नौमी तो नौवत बाजे बाजे राजा दशरथ दुआरे कौसिला रानी मंदिर ।मिलहु न सखिय सहेलरि मिलि जुलि चली राजा के जनमें हैं राम करिय नेव छावरि ॥ केहुं सखि नावा है बाजू बंदा केहु कजरा बट केहुरे दखिन वा को चीर करहिं नेवछावरि ॥ भितरा से निकरी कौशिल्या अगनवहि ठाढि भई रानी धर धर हृदय लगावें करहि नेव छावरि ॥ राम के मथवा चंदन वा बहुत निक लागइ दिखाहै गुरुअ वशिष्ट

बहुत निक लागइ ॥ राम के अंखिआं रतनारि कजरवा भलसोहै ॥ दिआहै फूआ सुभद्रा तो पतरी अंगुरी सनी ॥ राम के मथवा लटुरिया बहुत निक लागे ॥ जैसे फुलेह विच कलिया बदर छवि लागे ॥ राम के गोड़वा घुंघुरुवा बहुत निक लागे ॥ नान्हे गोड़े चलैं बकैआं देखैं राजा दशरथ ॥

लड़के की बरही

जनम के दिन से बारहे रोज बरही होती है उस दिन औरभी बड़ी खुशी होती है, भाई बंधु की नवाज़ः होती है, उस दिन का सोहर और ही होता है, बार हों रोज बंदूक की आवाज़ होती हैं,

बरही का सोहर

छोटे पेड़ छिउलिया तो मोतिया करहिगदे तेहि तर ठाढ़ि हरिनिआ हरिन बार जोहे ॥

कवधौं अहैं हरिना बृंदहि बन जावे आनु नंद घर बरही हरिन मारि जैहैं ॥ मचिअहि बैठी यशोदा तो हरिनि अरज करै रनि बरु मोहि मारि अड़ाबहु हरिन जिमिमारहु ॥ जाहु हरिनि घर आपन हम नहि मानव बिहने बाबुल के बरहिया हरिन मरवाउब ॥ अगवा के घोड़ वा एम चलेर पछवा लछन चले अरि पास छेकेनि बहेलिया हरिन मारि आए ॥ सभव हिं बैठे राजा दशरथ हरिन अरज करै राजा मसुआ सीझे जेवनार खलरिआ मोहि बकशे ॥ जाउ हरिनि घर अपने हम नहि मानव खलरी के खझरी मिढ़ाउब बबुल के दुलारव ॥

अन्न परासन

छठे महीने अन्नपरासन होता है अर्थात् लड़के को अन्न खिलाया जाता है उस दिन भी विरादरी खाती है और सोहर होता है लड़की का अन्न

परसन पांचवे महीने होताहै- उस दिनका सोहर नया नहीं होता है ॥

मूड़न कन छेदन

पहिले या तीसरे या पांचवें वरिस लड़के का और लड़की का बार बनवाया जाता है और कान छेदा जाता है इस का गीत अलग होता है ॥

मूड़न कन छेदन का गीत

जब पुत रहेउ तु वार और गोभवार देहि पैड़िआ न चलेनि मैआ तोहारि ॥ जब पुत रहेउ तुवार और गोभवार भांदा बिरोआन खाएनि मैआ तोहारि ॥ जब पुत रहेउ तुवार और गोभवार कार पियर नहिपहिरेनि मैआ तोहारि ॥ सभबहि बैठे नंदराम लड़हि कृष्ण सम सोने रूपे छुरवा गढ़ा वहु लुटरीमुड़ावहु ॥ घोड़वहि चढ़लनंदराम नौआ घरजाहि आजु

मोरे नाती क मूड़न वेगि चलि आवहु ॥
अरे अरे फूफू सुभद्रा देइ अलरि परीछहु प-
हिरे के देवउम झिन सारी और दखिन सारी,
अलरिआं पगिरोया, अलरिआ मोरि लाड़िली,
अलरिआ वड़ि सुन्दरि ॥

जनेऊ

आठए वरस जनेउ होता है और न होस के
तो णदी से पहिले जब चाहे तब होय जनेऊमें
मांड़व छाया जाता है, को हवर वनता है मात्र
का पूजन होता है, सिलपोहना होता है मटि
मंगरा होता है, जनेऊ का गीत और तरह का
होता है, मूंड़न का भी गीत गायाजाता है ॥

जनेऊका गीत

कुइआं की जगत पर मुजेह कर थान, उहा
उहा नंदराम करें असनान, तहां मुच कुन्दराम
हरदन पसारेनि, वितुरे जनेवा मोरि आछरियांति,

बैठइन पांचों लखन राम पांति ॥ लेहु जनेउआ उत्तम होउ, अब जाय बैठहु बसुदेव राम पांति, अब जाय बैठहु जनक राम पांति ॥

वरछा

इसके पीछे विवाह की बातें होती हैं लड़की के विवाह में भी गीत गाये जाते हैं बिटिया के विवाह में कम खुशी होती है बेटे के विवाह में बड़ी खुशी होती है विवाह होने से पहिले बिटिया की तरफ से ब्राह्मण और नाऊ लड़का देखने को जाते हैं जहां लड़का पसंद होता है वहां पहले बतौर परचे के गुड़ दही खाते हैं और जनेऊ और रुपैया बतौर सगुन के देते हैं उस को वाछा कहते हैं-उस समय के गीत को गारी कहते हैं ॥

वरछा की गारी

सोने के कलस लेइके निसरी कहारिन वाम्हन

पाव पखारी रस बास सुबासित गारी ॥ गंगा का पानी कलस भरि मंगेनि लेइ अदहन मंह डारी रस बास सुबासित गारी ॥ बाउर धोइनि ओर से ऊरद लेइ अदहन मंह डारी रस बास सुबासित गारी बरा बनाइनि ओर फुलौरी लेइ दहियन मह डारी रस बास० ॥ मासु मछरिया ओर से तीतिर कडुयह तेल बघारी रस बास० ॥ रतना जेवन कैकै निसरी कौसिल्या लेइ राम लछन मह तारी रस बास० ॥

तिलक

विवाह होने को जब थोड़ा दिन बाकी रहता है तब लड़की का भाई या चाचा मयदस पांच आदमी जाकर थरिया में अक्षत हरदी सुपारी नरियर दूब जनेऊ कपड़ा और नक़दी रखि के लड़के के माथे में हरदी दही और अक्षत का टीका लगाते हैं इसी दिन से दोनों जगह

शादी की तैआरी होने लगती है-और इस रोज से मटि मंगरा तक रोज गांव भर की और तैं लड़का और लड़की के घर बिआह के गीत गाती हैं ॥

तिलक का गीत

गाई के गोबरासे अंगना लिपायनि गजमोती चौक पुरायनि ॥ आजु नंद घर अनंद बधाव मोतिन्हरे ओन्ह करि अजुरीभराइनि ॥ आजु दशरथ घर आनंद बधाव मोतिअन्हरे ओन्ह करि अजुरी भरायनि ॥ आजु वसुदेव घर आनंद बधाव मोतिअन्हरे ओन्ह करि अंजुरी भराइनि ॥

॥ विआह का गीत

मचिअहि बैठलि रानी कौ[illegible] देई नैनन ढारहिं आंसु ॥ जीवन [illegible] मेर एकहु [illegible] स्वारथ मोरे घर राम कुंआर भलि [illegible] निहु

एनी कौसिला देई केन्ह तोर हरल गियान ॥
ऐसे मरहु एनी एम जनम कहं अब लरहु
राम विआह ॥ झिन२ कपड़ा पहिरि राजा
दशरथ घोड़े पिठि भें असवार ॥ हथवां लिहे
नि सुबरण के छड़िअवा चले राजा ऋषि के
दुआर ॥ अंगना बोहारत चेरिआ लौंडिआ
धाइ बखरि अहिजाइ नीनि तिलोक कर रेआ
राजा दशरथ ठाढ अहैं ऋषि के दुआर ॥ हथवा
किलिहे ऋषि झंझरा गेडुअवा गेडुआ गंगाजल
पानि ॥ पनिआ पिअहु खट बैठो राजा दशरथ
कहो अजोधा के बात ॥ हमरी अजोधिआ तो
छेम कुशल बा चाहिय कुशल तोहार ॥ मोरे
घर बाटी सीता रनिअवां तोरे घर राम कुआर ॥
सावन मास लगन नहिं बाटे आवे देहु जेठ
बैसाख ॥ जेठ बैसाख कै उत्तम लगनिआ राम
औ सीता विआह ॥ इति शुभम् संवत १९१९

1929
57
[illegible]

